BYJU'S The Learning App

सरस भारती

कक्षा-चौथी

पहला संस्करण 2011
25T - मार्च, 2011

© जम्मू कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल एजूकेशन द्वारा प्रकाशित

सैक्रेटरी, जम्मू कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल एजूकेशन द्वारा प्रकाशित

For Free Distribution

Rs._____

मुद्रकः– गीता ऑफसेट प्रिंटर्स, सी–90, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस–1, नई दिल्ली–110020

जम्मू कश्मीर बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन

https://byjus.com

आभार

प्रस्तुत पुस्तक "सरस भारती" कक्षा चौथी को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम पद्धति–2005 के अनुसार विकसित करने के लिये आयोजित प्रयोगशाला में आमंत्रित विशेषज्ञों तथा विद्वज्जनों का विशेष योगदान रहा जिन्होंने प्रयोगशाला में अपने बौद्धिक प्रयासों द्वारा कक्षा के स्तरानुसार यथोचित पाठ्य सामग्री को नव निर्मित पुस्तक में सम्मिलित करते हुए पाठ्य पुस्तक निर्माण के पवित्र कार्य को सम्पन्न किया। पुस्तक निर्माण हेतु आयोजित कार्यशाला को सफल बनाने तथा कार्य को लक्ष्य तक पहुँचाने के लिये निम्नलिखित विद्वानों का योगदान रहा :–

1. श्री केवल कृष्ण शर्मा : प्राध्यापक गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल मुबारक मंडी, जम्मू।
2. कुमारी रीता चाड़क : गर्वनमैंट हायर सैंकडरी स्कूल सरवाल, जम्मू।

उपर्युक्त विद्वानों के अतिरिक्त सी० डी० आर० विंग० के जिन अधिकारियों का विशेष सहयोग रहा वे इस प्रकार हैं:–

1. अशोक कुमार सैन, डायरैक्टर (अकैडमिक्स)
2. सुष्मा वर्मा : डिप्टी डायरैक्टर अकैडमिक जे.डी.
3. **डॉ० यासिर हामिद सिरवाल – शैक्षिक पदाधिकारी**
4. डॉ० बंसी लाल शर्मा – शैक्षिक पदाधिकारी

इसके अतिरिक्त पुस्तक निर्माण के इस सारे कार्य को सार्थक तथा सफल बनाते हुए तथा पाठ्य सामग्री को पुस्तकीय रूप में लाने के लिये पब्लिकेशन विभाग, जम्मू कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशनश्री मुकेश रकवाल जी और नेहा बिन्दरू के प्रति भी हम आभार व्यक्त करते हैं। जिन्होंने कम्प्यूटर द्वारा प्रस्तुत पाठ्य–सामग्री को लिपिबद्ध करने के लिये अपने अनथक प्रयास द्वारा हमारी सहायता की।

डॉ० शेख बशीर अहमद
सैक्ट्री
जम्मू कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्य क्रम शिक्षा पद्धति के अनुसार शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर शिक्षा नीति को एक सूत्रता में बांधने के लिये ऐसी शिक्षण–सामग्री की आवश्यकता महसूस की गई है जो राष्ट्रीय पाठ्य क्रम पद्धति 2005 की शिक्षा नीति को पूर्णतया प्राप्त कर सके। सम्भवतः इसी दृष्टिकोण को ध्यान में लाते हुए जम्मू–कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन ने राज्य की विभिन्न विषयों से सम्बन्धित विशेषज्ञों की कार्यशालाएं आयोजित करके उपर्युक्त शिक्षानीति के अनुसार पुस्तकों को विकसित करने का प्रयास किया।

प्रस्तुत पुस्तक प्राथमिक कक्षाओं में हिन्दी भाषा–शिक्षण के लिये 'सरस भारती' भाग–4 पुनः शोधित 'सरस भारती' पुस्तक माला की चौथी कड़ी है। प्रस्तुत पुस्तक में विद्यार्थियों के अन्दर सम्यक बौद्धिक विकास लाने का प्रयास किया गया है जिससे छात्र हिन्दी के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों को भी सरलता से पढ़ सकें तथा पठित विषय वस्तु के आधार पर चिंतन की ओर प्रेरित एवम् अग्रसर हो सकें। प्रस्तुत पुस्तक के अन्तर्गत विभिन्न विधाओं – कविता कहानी, निबन्ध, जीवनी आदि का प्रयोग किया गया है। आशा है कि पुस्तक को पढ़ने के उपरान्त छात्र इस स्तर की अन्य पुस्तकों तथा पत्र–पत्रिकाओं को पढ़ने में भी रूचि लेंगे। पुस्तक में यह प्रयास किया गया है कि पुस्तक में संग्रहीत सामग्री के द्वारा छात्रों को अध्ययन की ओर आकर्षित किया जा सके तथा उनमें अभीष्ट जीवन–मूल्यों (नैतिकता, राष्ट्रीयता, विश्वबंधुत्व) का सम्प्रेषण किया जा सके। इसके अतरिक्त छात्रों के अन्दर अध्ययन सम्बन्धी रूचि उत्पन्न करने के लिये कुछेक मनोरंजनात्मक रचनाओं के अतिरिक्त उनको उनके प्रादेशिक वातावरण से भी जोड़ने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक को विकसित करने में जिन विद्वज्जनों का सहयोग रहा वे इस प्रकार हैं :–

1. श्री केवल कृष्ण शर्मा : प्राध्यापक, गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल मुबारक मंडी, जम्मू।
2. कुमारी रीता चाड़क : गर्वनमैंट हायर सैंकडरी स्कूल सरवाल, जम्मू।

नसीम लंकर
चेयरमैन
जम्मू कश्मीर बोर्ड ऑफ स्कूल
एजूकेशन

https://byjus.com

BYJU'S
The Learning App

पाठ–सूची

1.	सुमन एक उपवन के	1–6
2.	दाता रणपत	7–17
3.	शेख़ मुहम्मद अब्दुल्ला	18–25
4.	सीखो	26–32
5.	दयानतदारी	33–36
6.	श्रीनगर से लेह की यात्रा	37–47
7.	तवी की आत्म कथा	48–56
8.	मन के भोले–भाले बादल	57–61
9.	किरमिच की गेंद	62–73
10.	दोस्त की पोशाक	74–82
11.	दान का हिसाबनीति	83–95
12.	स्वतंत्रता की ओर	96–107
13.	पढ़क्कू की सूझ	108–112
14.	मुफ़्त ही मुफ़्त	113–125

https://byjus.com

BYJU'S
The Learning App

सुमन एक उपवन के

सुमन	पलना	उर	स्वर	भ्रमर
गुंजन	गगन	सूत्र	सुगंध	शृंगार

हम सब सुमन एक उपवन के।

एक हमारी धरती सबकी
जिसकी मिट्टी में जनमें हम,
मिली एक ही धूप हमें है
सींचे गए एक जल से हम।

पले हुए हैं झूल–झूलकर
पलनों में हम एक पवन के।

सूरज एक हमारा, जिसकी
किरणें उर की कली खिलातीं,
एक हमारा चाँद, चाँदनी
जिसकी हम सबको नहलाती।

मिले एक से स्वर हमको हैं
भ्रमरों के मीठे गुंजन के।

रंग–रंग के रूप हमारे
अलग–अलग है क्यारी–क्यारी

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

लेकिन हम सबसे मिलकर ही
है उपवन की शोभा सारी।
एक हमारा माली, हम सब
रहते नीचे एक गगन के।
काँटों में खिलकर हम सबने
हँस–हँस कर है जीना सीखा,
एक सूत्र में बंधकर हमने
हार गले का बनना सीखा।
सबके लिए सुगंध हमारी
हम शृंगार धनी–निर्धन के।

– द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी

अभ्यास

1. बताएँ और लिखें :–

(क) हम जिसकी मिट्टी में जनमें है, वह कौन है ?

.....

(ख) हम किस पलने में झूलकर पले हैं ?

.....

(ग) हमें एक जैसे स्वर किस के मिलते हैं ?

.....

(घ) "हमारा माली" का क्या अर्थ है ?

.....

(ङ) "एक सूत्र में बंध कर" हम क्या बनते हैं ?

.....

(च) हम अपनी सुगंध किसे देते हैं ?

.....

2. पूरे करें :–

क) रंग–रंग के रूप हमारे

.....

लेकिन हम सबसे मिलकर ही

.....

(ख) सूरज .....

किरणें उर की .....

एक हमारा चाँद, चाँदनी

जिसकी .....

(ग) सबके लिए सुगंध हमारी

.....

उद्देश्य :– पाठ का प्रत्यास्मरण।

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

3. "जिसकी हैं मिट्टी में जनमें हम" इस वाक्य को ठीक समझने के लिए यों भी लिखा जा सकता है – हम जिसकी मिट्टी में जनमें हैं। इस प्रकार निम्नलिखित वाक्यों का शब्द क्रम बदलकर लिखें :–

क) है मिली एक ही धूप हमें। : .....

ख) मिले एक से स्वर हमको हैं। : .....

ग) सींचे गए हैं एक जल से हम। : .....

उद्देश्य : गद्य के शब्दक्रम से परिचित होना।

4. पढ़ें, समझें और लिखें :–

हम	हमने	हम को	हमें	हम से
.....	.....	.....	.....	.....
हमारा	हमारे	हमारी	हम पर	
.....	.....	.....	.....	

उद्देश्य : "हम" के कारकरूपों का अभ्यास।

5. यह वाक्य पढ़ें :–

रंग–रंग के रूप हमारे

इस वाक्य में "रंग" तथा "रंग" के बीच योजक (–) लगा है। कविता में से ऐसे तीन शब्द चुनकर लिखें जिनमें योजक चिह्न लगा हो।

....

उद्देश्य :– योजक चिह्न (–) का अभ्यास।

6. पढ़ें और लिखें :–

हमें एक सूत्र में बंधकर गले का हार बनना चाहिए।

.....

.....

.....

.....

.....

उद्देश्य :– लेखन–कौशल का विकास।

7. इस कविता को कंठस्थ करके कक्षा में गाकर सुनाएँ।

उद्देश्य :– कविता की लय और ध्वनि से परिचित करवाना।

8. रंग–बिरंगे फूलों के चित्र इकट्ठे करके एलबम में लगाएँ।

उद्देश्य :– योग्यता–विस्तार

9. पढ़ें और समझे :–

सुमन	–	फूल
गगन	–	आकाश,
उपवन	–	बाग
भ्रमर	–	भौंरा
गुंजन	–	भौंरों की आवाज़

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

शृंगार	–	शोभा
निर्धन	–	गरीब
सूत्र	–	धागा
सुगंध	–	खुशबू

10. "गुलाब" के फूल का चित्र बनाएँ

उद्देश्य :– सृजनात्मक–शक्ति का विकास।

दाता रणपत

प्रसिद्ध	लोकनायक	सौगंध	शांतिप्रिय	अन्यायी
सदस्य	हथियाना	समर्थन	ध्यानपूर्वक	निर्णय
निर्दोष	प्रलोभन	द्वेष	दानवीरता	बलिदान
श्रद्धा	कुष्टरोग	छलकपट	न्यायप्रिय	निपटारा

दाता रणपत जम्मू के प्रसिद्ध न्याय–प्रिय व्यक्ति थे। उनके न्याय और सत्य की कई कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। उनकी दानवीरता के कारण उन्हें "दाता" कहकर पुकारा जाता है। उनकी जीवन–गाथा आज भी बड़े चाव और आदर से सुनते–सुनाते हैं।

दाता रणपत का जन्म बीरपुर गाँव में हुआ। बीरपुर जम्मू से लगभग बीस किलोमीटर की दूरी पर है। रणपत के पिता का नाम लद्दा और माता का नाम आलमा था। बचपन से ही रणपत शांतिप्रिय थे। वे लड़ाई–झगड़े से दूर रहते थे। सत्य का पक्ष लेते थे। दीन–दुखियों की सेवा करते थे। उनके न्यायप्रिय और शांतिप्रिय स्वभाव के कारण उन्हें झगड़ों के निपटारे के लिए बुलाया जाता था। रणपत का विवाह छोटी आयु में ही हो गया। उनकी पत्नी का नाम शुक्रा था। शुक्रा ने कठिन समय में सदा रणपत का साथ दिया। उस

https://byjus.com

समय डुग्गर प्रदेश छोटी–छोटी जागीरों में बटाँ हुआ था। बीरपुर का जागीरदार बाँगी चाड़क था। वह बड़ा अन्यायी, कपटी और दुष्ट था। उसने छल–कपट से अपने संबंधियों की भूमि हथिया ली थी। इस कारण बाँगी और उनका झगड़ा चल रहा था। दाता रणपत बीरपुर के सरपंच थे। बाँगी के संबंधियों ने रणपत को झगड़ा निपटाने के लिए बुलाया। बाँगी को अपने बल और जागीरदारी पर घमंड था। वह समझता था कि रणपत उसका समर्थन करेगा। माता आलमा ने बेटे रणपत को बाँगी के झगड़े में न पड़ने के लिए कहा, परन्तु रणपत न माना। उन्हें अपने न्याय और लोगों पर पूरा विश्वास था। "बामना दी बाड़ी" (बाड़ी बामना) में बाँगी तथा उसके संबंधियों के बारह परिवारों के लोग इकट्ठे हुए। सभी ने तिनके धारण कर सौगंध खाई कि वे रणपत का निर्णय मान लेंगे।

रणपत ने सबकी बात ध्यानपूर्वक सुनी। सोच–समझकर जो निर्णय उन्होंने सुनाया उससे सभी प्रसन्न हुए। सबने दाता रणपत की जय–जयकार की। केवल बाँगी चाड़क इस निर्णय से दुखी था, क्योंकि न्याय उसके पक्ष में नहीं था। उसने मन ही मन रणपत की हत्या करवाने की ठान ली।

बाँगी ने कुछ लोगों को लालच देकर रणपत की हत्या करने के लिए कहा पर कोई नहीं माना वहाँ हेड़ी नाम का एक बदनाम जाट रहता था। बाँगी ने उसे बुलाकर पुरस्कार का लालच दिया, पर हेड़ी ने भी रणपत की हत्या करने से इन्कार कर दिया। रणपत के मौसेरे भाई उससे द्वेष करते थे। बाँगी

https://byjus.com

को इस बात का पता चल गया। उसने उन्हीं को बुलाकर रणपत की हत्या करने के लिए कहा। उन्होंने रणपत को जाल में फँसाया और धोखे से उनकी हत्या कर दी। बेचारे रणपत निर्दोष मारे गए।

कहते हैं दाता रणपत की हत्या करवाने का परिणाम यह निकला कि बाँगी भी कभी सुखी न रहा। उसे कुष्ठ रोग हो गया। उसके शरीर के अंग गल गए। उसके परिवार के सदस्य भी उसको छोड़ गए।

सत्य और न्याय के लिए दाता रणपत के बलिदान को आज भी स्मरण किया जाता है। लोग बीरपुर जाकर उनकी समाधि पर श्रद्धा के फूल चढ़ाते हैं। रणपत जम्मू के सच्चे लोकनायक थे।

अभ्यास

1. बताए और लिखें :

क) दाता रणपत कौन थे ? रणपत को "दाता" क्यों कहते थे ?

.....

.....

ख) रणपत का स्वभाव कैसा था ?

.....

ग) बीरपुर का जागीरदार कौन था ?

.....

घ) बाँगी ने हेड़ी को लालच क्यों दिया ?

.....

च) "रणपत" के समय डुग्गर प्रदेश की दशा कैसी थी ?

.....

छ) रणपत के बलिदान को किस लिए याद किया जाता है ?

.....

उद्देश्य :– पाठ–बोध तथा प्रत्यास्मरण।

2. पढ़ें, समझें और लिखें :–

क) कठिन सरल ख) सत्य असत्य

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

पुरस्कार	.....	न्याय	.....
समर्थन	.....	विश्वास	.....
सुखी	.....	शांति	.....

उद्देश्य :– विलोम शब्दों का ज्ञान।

3. वाक्य बनाएँ:–

छोटी–छोटी

उदा० :– हमें छोटी–छोटी बातों पर नहीं लड़ना चाहिए।

लड़ाई–झगड़े

.....

बच्चे–बूढ़े

.....

करते–कराते

.....

उद्देश्य :– शब्द–युग्मों का वाक्यों में प्रयोग।

4. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करें :–

शांतिप्रिय, सच्चे, समाधि, श्रद्धा, दीन–दुखियों, कुष्ठ–रोग।

क) दाता रणपत जम्मू के ..... लोकनायक थे।

ख) लोग बीरपुर जाकर उनकी ..... पर ..... के फूल चढ़ाते हैं।

ग) बाँगी को ..... हो गया।

घ) दाता रणपत ..... की सेवा करते थे।

ड) बचपन से ही रणपत ..... थे।

उद्देश्य–सही शब्द–चयन।

5. पढ़े, समझें और लिखें :–

क)	झगड़ा	झगड़े	ख) कथा	कथाएँ
	.....	.....	.....	.....
	तिनका	तिनके	लता	लताएँ
	.....	.....	.....	.....
ग)	कहानी	कहानियाँ	लड़ाई	लड़ाइयाँ
	.....	.....	.....	.....
	समाधी	समाधियाँ	नदी	नदियाँ
	.....	.....	.....	.....

उद्देश्य :– आकारांत तथा ईकारांत शब्दों का वचन–परिवर्तन।

6. पढ़ें, समझें और लिखें :–

सुंदर	सुंदरता	सरल	सरलता
दानवीर	.....	कठिन	.....
समान	.....	नम्र	.....

उद्देश्य :– विशेषण शब्दों से संज्ञा शब्द बनाना।

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

7. स्तंभ क, ख और ग में दिए वाक्यांशों से सही वाक्य बनाकर लिखें :–

क	ख	ग
दाता रणपत	जम्मू के प्रसिद्ध लोकनायक के बलिदान को आज भी को जाल में फँसाया और उनकी के मौसेरे भाई उनसे द्वेष	हत्या कर दी थे। याद किया जाता है। करते थे।

उद्देश्य :– उपयुक्त वाक्य रचना का ज्ञान।

8. दिए गए शब्दों से वाक्य बनाएँ :–

क) पुरस्कार – रमेश को कक्षा में प्रथम आने पर पुरस्कार मिला।

ख) प्रसिद्ध – .....

ग) दाता – .....

घ) शांतिप्रिय – .....

च) कठिन – .....

छ) बलिदान – .....

ज) लोकनायक – .....

उद्देश्य :– शब्दों का वाक्यों में प्रयोग।

9. श्रुतलेख :– शांतिप्रिय, प्रसिद्ध, संबंधी, ध्यानपूर्वक, समर्थन, निर्णय, श्रद्धा, निर्दोष, अन्यायी, लोकनायक, बलिदान, समाधि, मौसेरे,

कुष्ट–रोग, विश्वास।

उद्देश्यः– शुद्ध श्रवण व लेखन का अभ्यास।

10. दाता रणपत के विषय में पाँच वाक्य लिखें :–

.....

.....

.....

.....

.....

उद्देश्यः– प्रत्यास्मरण व लेखन–कौशल का अभ्यास।

11. पढ़ें और लिखे :–

रणपत की जीवन–गाथा आज भी लोग बड़े आदर से सुनते–सुनाते हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

उद्देश्य :– लेखन–कौशल अभ्यास।

https://byjus.com

BYJU'S
The Learning App

12. शब्दार्थ :—

दाता — देने वाला

जम्मू-कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

शेख़ मुहम्मद अब्दुल्ला

मुख्यमंत्री	उपाधि	संस्था	आंदोलन
समर्थन	आक्रमण	राष्ट्रपिता	उन्नति
योजना	समूचा	विश्वविद्यालय	
समाज–सुधारक		स्वतंत्रतासंग्राम	आजीवन

प्यारे बच्चो! आपने देश के बड़े–बड़े नेताओं के नाम सुने होंगे। इन नेताओं ने देश–सेवा करके अपना और अपने देश का नाम ऊँचा किया है। इनमें से एक शेख़ मुहम्मद अब्दुल्ला थे। अनेक कार्यों के कारण शेख साहब को "शेरे–कश्मीर" कहा जाता है। वे हमारे प्रिय नेता थे।

शेख़ साहब 5 दिसंबर 1905 ई० को श्रीनगर में "सऊरा" नामक ग्राम में पैदा हुए। उन्होंने बचपन से ही बड़ी लगन से पढ़ना आरंभ किया। बड़े होकर अलीगढ़ विश्वविद्यालय से एम.एस. सी. की उपाधि प्राप्त की। एम.एस.सी करने के बाद आपको अध्यापक नियुक्त किया गया। यह वह समय था जब हमारे यहाँ शख्सी राज था। जमींदार किसानों के साथ

अच्छा व्यवहार नहीं करते थे। लोग निर्धन थे।

लोगों का यह दुख शेख साहब से देखा नहीं गया। उन्होंने अपने पद से त्याग–पत्र दे दिया और मुस्लिम–कान्फ्रेंस नामक संस्था की नींव रखी। शेख़ साहिब ने लोक राज्य के लिए कश्मीर में आंदोलन शुरू कर दिया। थोड़े समय में ही शेख़ अब्दुल्ला यह समझ गए कि राज्य के सभी लोग जमींदार निज़ाम से तंग हैं। बच्चो! आप जानते हैं कि भारत का स्वतंत्रता–संग्राम पहले से ही चल रहा था। शेख़ साहब का इस संग्राम के साथ गहरा संबंध था। महात्मा गाँधी ने देश को अंग्रेजों से आजादी दिलाने के लिए आंदोलन छेड़ रखा था। शेख़ साहब को गाँधी जी के अलावा जवाहर लाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल, मौलाना आज़ाद आदि नेताओं ने कश्मीर के आंदोलन में सहायता दी। शेख़ साहब ने 1946 ई० में "कश्मीर छोड़ दो" का आंदोलन चलाया। इस पर शेख साहब को कारागार में बन्द कर दिया गया। उन्हें तब मुक्त किया गया जब 1947 ई० में भारत स्वतंत्र हुआ और पाकिस्तान ने कश्मीर को हड़पने के लिए आक्रमण कर दिया। शेरे–कश्मीर ने जनता में जागृति पैदा की। हिंदू–मुसलमान–सिखों ने मिलकर पाकिस्तानी सेना का मुकाबला किया। उस समय यह नारा यहाँ के बच्चे–बच्चे की जबान पर था:–

शेर–ए–कश्मीर का क्या इर्शाद

हिंदू, मुस्लिम, सिख इत्तिहाद।

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

इस नारे के प्रभाव और शेख़ साहब के अपार प्यार के कारण राज्य के लोग एक दूसरे के साथ मिलकर रहने लगे। इस मेलजोल को देखकर 1947 में राष्ट्रपिता गाँधी ने कहा था कि मुझे इस समय देश के कश्मीर भाग में ही रोशनी की किरण दिखाई देती है।

यह शेख़ साहब की देश सेवा का ही फल था कि उन्हें 5 मार्च 1948 ई० को जम्मू–कश्मीर के "प्रधान–मंत्री" का पद सौंपा गया। वे बड़ी लगन से गरीब, दुखी और पिछड़े समाज की सेवा में जुट गए। इनके दिल में सभी वर्गों के लिए सम्मान था। उन्होंने अपने कार्य से यह साबित कर दिया कि राजनीति में धर्म का कोई दखल नहीं होता। सभी के अधिकार बराबर होते हैं। उन्होंने कश्मीर को उन्नति के मार्ग पर ले जाने के लिए "नया कश्मीर" का कार्यक्रम बनाया। भूमिहीन किसानों की भलाई के लिए उन्होंने राज्य की लाखों एकड़ भूमि ज़मींदारों से मुक्त करवाकर किसानों में बांट दी।

शेरे–कश्मीर स्वतंत्रता–संग्राम के एक महान सिपाही, समाज–सुधारक, किसानों और मज़दूरों के प्यारे, कश्मीर के सच्चे सेवक और कुशल शासक थे। 8 सितम्बर 1982 ई० को श्रीनगर में शेरे–कश्मीर का देहांत हो गया। उनकी आजीवन सेवाओं के कारण आज भी हम उन्हें आदर के साथ याद करते हैं।

अभ्यास

1. बताएँ और लिखें :–

क) शेरे–कश्मीर का असली नाम क्या था ?

.....

ख) शेख़ – साहब को कारागार में क्यों डाल दिया गया ?

.....

ग) शेख़–साहब ने कश्मीर में पाकिस्तानी आक्रमण के समय क्या नारा दिया ?

.....

घ) कश्मीर के मेलजोल से प्रभावित होकर गाँधी जी ने क्या कहा था ?

.....

.....

उद्देश्य :– पाठ–बोध व प्रतयास्मरण।

2. सही शब्दों से वाक्य पूरे करें :–

राजनीति, शेरे–कश्मीर, समाज–सुधारक, सऊरा, अलीगढ़।

क) शेख़ साहब की बहादुरी के कारण उन्हें ..... कहा जाता है।

ख) शेख़ साहब का जन्म स्थान ..... है।

ग) शेख़ साहब ने ..... विश्वविद्यालय से एम.एस.सी. की उपाधि प्राप्त की थी।

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

घ) शेख़ साहब ने यह साबित कर दिया कि ..... में धर्म का कोई स्थान नहीं है।

छ) शेख़ साहब बहुत बड़े समाज ..... थे।

उद्देश्यः– उपयुक्त शब्दों से वाक्यपूर्ति।

3. "क" और "ख" स्तंभों के वाक्यांशों को मिलाकर लिखे :–

क	ख
शेख़ साहब बचपन से ही	बड़े परिश्रमी और दयालु–व्यक्ति थे।
	रोशनी की किरण दिखाई देती है।
मुझे देश के कश्मीर भाग में ही	

अ) .....

आ) .....

इ) .....

उ) .....

ए) .....

उद्देश्यः–सही वाक्य रचना तथा प्रत्यास्मरण।

4. वाक्यों में प्रयोग करें :–

जैसेः– धुन का पक्का – रमेश धुन का पक्का है, वह अवश्य प्रथम आएगा।

दम लेना – .....

जोश भरना – .....

अटूट अंग – .....

रोशनी की किरण – .....

उद्देश्यः– पदबंधों का वाक्यों में प्रयोग

5. सही कथन के आगे ✓ तथा गलत कथन के आगे ☒ का चिह्न लगाएँ :–

क) कश्मीर–सरकार के शिक्षा–विभाग में उन्होंने अध्यापक के रूप में कार्य किया। ( )

(ख) नैशनल–कान्फ्रेंस में एक ज़िम्मेदार सरकार बनाने के लिए आंदोलन शुरू किया था। ( )

ग) बाद में नेशनल–कान्फ्रेंस को मुस्लिम–कान्फ्रेंस में बदल दिया गया। ( )

घ) 5 मार्च 1948 को शेख़ साहब को जम्मू–कश्मीर राज्य के प्रधानमंत्री का पद सौंपा गया। ( )

च) शेरे–कश्मीर स्वतंत्रता संग्राम के महान सिपाही थे। ( )

उद्देश्य :– सही गलत का विवेक।

6. विलोम शब्द ढूँढकर खाली स्थनों में लिखें :–

योग्य	पुराना	योग्य	अयोग्य
आरंभ	क़ैद	आरंभ	अंत
गरीब	अयोग्य	गरीब	.....
मुक्त	अमीर	मुक्त	.....

https://byjus.com

नया	सुख	नया	.....
दुख	अंत	दुख	.....
धर्म	अधर्म	धर्म	.....

उद्देश्य :– विलोम शब्दों का ज्ञान।

7. पढ़ें, समझें और लिखें :–

रुपया	गुरु	रुक	पुरुष
.....	.....	.....	.....
रूप	भारू	रूई	स्वरूप
.....	.....	.....	.....

उद्देश्य :– र के साथ (ु) तथा (ू) मात्रा का प्रयोग।

8. पढ़ें और लिखें :– मुझे देश के कश्मीर भाग में ही रोशनी की किरण दिखाई देती है।

.....

.....

.....

.....

उद्देश्यः– लेखन–कौशल का विकास।

9. श्रुतलेख :– मुख्यमंत्री, विश्वविद्यालय, स्वतंत्रता, राष्ट्रपिता, मुक्त, शक्ति, व्यक्ति, संस्था, आक्रमण, कान्फ्रेंस, अँग्रेज़, प्रभाव, प्रधानमंत्री, कार्यक्रम, मार्च, प्रजातंत्र, समर्थन, इर्शाद, धर्म, सम्मान, उन्नति,

मुहम्मद, ज़िम्मेदार, अब्दुल्ला।

उद्देश्यः– शुद्ध श्रवण और लेखन का अभ्यास।

10. जम्मू–कश्मीर के किन्हीं दो मंत्रियों के नाम लिखें :–

.....

उद्देश्यः– योग्यता–विस्तार।

11. शब्दार्थ :–

मुख्य	–	बड़ा	शेरे–कश्मीर	–	कश्मीर का शेर
मुक्त	–	आज़ाद	त्याग–पत्र	–	इस्तीफा
संस्था	–	सभा, संगठन	इर्शाद	–	आज्ञा, आदेश
संग्राम	–	युद्ध	स्वतंत्रता	–	आज़ादी
आंदोलन	–	हलचल	कार्यक्रम	–	प्रोग्राम
आजीवन	–	जीवन भर	समूचा	–	सारा
इत्तिहाद	–	एकता	उपाधि	–	पदवी, डिग्री
समर्थन	–	किसी मत की पुष्टि			

उद्देश्य :– शब्दार्थ–ज्ञान।

https://byjus.com

सीखो

नित	कोमल	तरु	स्वदेश	शीश
धीरज	प्राणी	धारा	पथ	पृथ्वी

फूलों से नित हँसना सीखो,
भौंरों से नित गाना
तरु की झुकी डालियों से नित
सीखो शीश झुकाना।

सीख हवा के झोंकों से लो
कोमल भाव बहाना
दूध तथा पानी से सीखो
मिलना और मिलाना।

सूरज की किरणों से सीखो
जगना और जगाना
लता और पेड़ों से सीखो
सब को गले गलाना।

मछली से सीखो स्वदेश के
लिए तड़प कर मरना

पतझड़ के पेड़ों से सीखो
दुख में धीरज धरना।

दीपक से सीखो जितना
हो सके अँधेरा हरना
पृथ्वी से सीखो प्राणी की
सच्ची सेवा करना।

जलधारा से सीखो आगे
जीवन–पथ में बढ़ना
और धुएँ से सीखो हरदम
ऊँचे ही पर चढ़ना।

– श्रीनाथ सिंह

अभ्यास

1. बताएँ और लिखें :–

निम्नलिखित से हमें क्या सीख मिलती है :–

भौंरों से .....

तरु की झुकी डालियों से .....

हवा के झोंकों से .....

दूध और पानी से .....

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

सूरज की किरणों से .....

उद्देश्य :– पाठ–बोध तथा प्रत्यास्मरण।

2. निम्नलिखित बातें हम किन से सीखते हैं :–

सबको गले लगाना

.....

स्वदेश के लिए तड़पकर मरना

.....

दुख में धीरज रखना

.....

अँधेरा हरना

.....

.....

सच्ची सेवा करना

.....

उद्देश्यः– पाठ–बोध।

3. "क" भाग को "ख" भाग से मिलाकर सही वाक्य लिखिए :–

क	ख
दूध और पानी से सीखो	दुख में धीरज धरना।
सूरज की किरणों से सीखो	मिलना और मिलाना।
पतझड़ के पेड़ों से सीखो	आगे जीवन पथ में बढ़ना।
पृथ्वी से सीखो	जगना और जगाना।
जलधारा से सीखो	प्राणी की सच्ची सेवा करना।

अ) .....

आ) .....

इ) .....

ई) .....

उ) .....

उद्देश्यः– 1. सही वाक्य–रचना। 2. पाठ का प्रत्यास्मरण

4. रिक्त स्थानों को सही शब्दों से पूरा करें :–

क) तरु की झुकी ..... से नित सीखो शीश झुकाना।
(डाली / डालियों)

ख) सीख हवा के ..... से लो कोमल भाव बनाना।
(झोंकों / झोंका)

ग) सूरज की ..... से सीखो जगना और जगाना।
(किरण / किरणों)

घ) लता और ..... से सीखो सबको गले लगाना। (पेड़ों / पेड़)

उद्देश्यः– प्रसंग संकेत द्वारा सही शब्द पहचान कर प्रयोग करना।

5. नीचे दिए पदबंधों से उपयुक्त वाक्य बनाएँः–

गले लगाना – राम ने भरत को प्यार से गले लगा लिया।

धीरज धरना– .....

सच्ची सेवा – .....

जीवन पथ – .....

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

ऊँचा चढ़ना – .....

उद्देश्य :– वाक्य–रचना।

6. सोचें और लिखें :–

क) पतझड़ में पेड़ों की क्या दशा हो जाती है ?

.....

.....

ख) पृथ्वी प्राणी की सेवा कैसे करती है ?

.....

.....

उद्देश्य :– विस्तृत विवरण की जानकारी प्राप्त करना।

7. क)

हंसना	रोना		स्वदेश	परदेश
कोमल	.....		दुख	.....
जगना	.....		अँधेरा	.....
चढ़ना	.....		जीवन	.....

उद्देश्यः– विलोम शब्दों का ज्ञान।

ख)

मिलना	मिलाना	पढ़ना	पढ़ाना
.....	.....	.....	.....
जगना	जगाना	चढ़ना	चढ़ाना
.....	.....	.....	.....

उद्देश्य :– प्रेरणार्थक क्रिया–निर्माण।

8. पढ़ें, समझें और लिखें :–

क) जैसे :–	तरु,	चारु,	रुचि,	अरुण,
	.....	.....	.....	.....
ख)जैसे :–	भारू,	रूस	गोरू,	रूपक,
	.....	.....	.....	.....

उद्देश्यः– र के साथ " ु " और " ू " की मात्राओं का प्रयोग।

9. पढ़े और समझें :–

सूरज की किरणों से सीखो जगना और जगाना।

.....

.....

.....

.....

.....

उद्देश्य :– लेखन–कौशल का अभ्यास

10. पढ़े और समझें :–

कोमल	–	नरम, नाजुक
नित	–	सदा
तरु	–	वृक्ष, पेड़
शीश	–	सिर
स्वदेश	–	अपना देश

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

धीरज – हिम्मत, शांत भाव, मन की स्थिरता

प्राणी – जीव–जंतु

धारा – पानी आदि की धार

पथ – रास्ता

पृथ्वी – ज़मीन

उद्देश्यः– भावार्थ–ज्ञान।

10. दीपक का चित्र बनाएँ :–

उद्देश्यः– सृजनात्मक–शक्ति का विकास।

दयानतदारी

एक था बूढ़ा बहुत गरीब,
उससे भी था बहतर नसीब।
कर्म में जिसकी सच्ची प्रीत,
कर रहा अपना समय व्यतीत।
लकड़ियां जंगल से लाकर,
गट्ठा उसका एक बनाकर।
जाता बेचने रोज बाजार,
जिससे पलता था परिवार।
एक रोज दरिया पे खड़ा था,
पेड़ लगा वहाँ बहुत बड़ा था।
पहुँचा वहाँ कुल्हाड़ी पकड़कर,
बैठ गया फिर ऊपर चढ़कर।
काटने की उसने की तैयारी,
टहनी के जब ऊपर मारी।
दस्ता गया था उसका टूट,
गई हाथ से इकदम छूट।
गिर कर गई दरिया में डूब,

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

करूं क्या उसने सोचा खूब।
आखिर रोने लगा बेचारा,
होगा नहीं अब मेरा गुजारा।
उसके देखकर व्याकुल प्राण,
द्रवित हो गए फिर भगवान।
ईश्वर ने सब देखा–भाला,
समाधान भी उसका निकाला।
भगवान ने डुबकी एक लगाई,
कुल्हाड़ी सोने की बाहर लाई।
पूछा बाबा यही है तेरी,
बूढ़े ने कहा नहीं यह मेरी।
डुबकी उसने और लगाई,
चाँदी की फिर बाहर लाई।
पूछा पुनः यही है तेरी,
उसने कहा नहीं यह मेरी,
आखिर दी लोहे की लाकर,
बूढ़ा बोला फिर मुस्काकर।
यही असली मेरी महाराज,
सफल हुआ अब मेरा काज।

देख उसकी दयानतदारी,
कृपा प्रभु ने की फिर भारी।
वापस की थीं उसने जितनी,
ईश्वर ने उसको दी उतनी।

डॉ० बंसी लाल शर्मा

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिये :–

(क) गरीब बूढ़ा क्या काम करता था ?

(ख) बूढ़े की कुल्हाड़ी छूट कर कहाँ जा गिरी थी ?

(ग) भगवान ने पानी में से कितनी कुल्हाड़ियां निकालीं ?

(घ) इस कविता से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

2. नीचे दिए शब्दों से वाक्य बनाइये :–

बूढ़ा, गरीब, नसीब, परिवार, कुल्हाड़ी, टहनी,
दरिया, भगवान, प्रवित, दयानत दारी।

3. नीचे दिये शब्दों द्वारा रिक्त स्थान भरिये :–

सोने, दरिया, दयानतदारी, लकड़ियां, चाँदी

(क) बूढ़ा बहुत ..... था।

(ख) बूढ़ा ..... ले जाकर बाजार बेचता था।

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

(ग) एक दिन बूढ़े की कुल्हाड़ी ..... में जा गिरी।

(घ) भगवान ने बारी–बारी ..... और ..... की दो कुल्हाड़ियां निकाली।

(ङ) बूढ़े की ..... पर खुश होकर भगवान ने लोहे की कुल्हाड़ी के साथ दूसरी कुल्हाड़ियां भी उसे दे दीं।

4. नीचे दिए उदाहरणों को देखकर शब्द बनाओ :–

जैसे :– बूढ़ा – बूढ़े

(क) लकड़ी – .....

पालता – .....

कुल्हाड़ी – .....

टहनी – .....

गट्ठा – .....

श्रीनगर से लेह की यात्रा

जलवायु	रीति–रिवाज	प्राकृतिक	दृश्य
निजी	स्वास्थ्यवर्धक	पर्यटक	कड़ी

बच्चो, आप जानते हैं कि जम्मू, कश्मीर और लद्दाख हमारे राज्य के तीन बड़े भाग हैं। इन तीनों का जलवायु भिन्न–भिन्न है। इनमें रहने वाले लोगों का रहन–सहन, भाषाएँ और रीति–रिवाज भी अलग–अलग हैं, पर तीनों भागों के लोग आपस में मिलजुल कर प्यार से रहते हैं।

लद्दाख जम्मू–कश्मीर राज्य के पूर्व में स्थित एक दूर का क्षेत्र है। लदाख के बहुत से निवासी काम तथा ऊँची शिक्षा के लिए श्रीनगर, जम्मू तथा देश के दूसरे नगरों में जाते हैं। लद्दाख हमारे राज्य का एक बहुत सुंदर क्षेत्र है। हमें चाहिए कि वहाँ की यात्रा करें और लोगों के साथ मेल–जोल बढ़ाएँ। हम हवाई जहाज से लद्दाख जाना चाहें तो जम्मू और श्रीनगर दोनों स्थानों से आधा घंटा भर लगता है। जहाज़ ऊँची बर्फीली और बिना बर्फ वाली नंगी पहाड़ी चोटियों के ऊपर उड़ान भरता है। पर जो आनंद प्राकृतिक दृश्य देखते हुए सड़क की यात्रा में आता वह हवाई यात्रा में कहाँ! क्यों न हम लेह (लद्दाख) की सड़क–यात्रा के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त करें। बच्चो, लेह की यात्रा श्रीनगर या मनाली (हिमाचल प्रदेश) के रास्ते से की जा सकती

https://byjus.com

है। श्रीनगर से लेह का फासला 434 कि० मी० है। श्रीनगर और जम्मू दोनों स्थानों से लेह के लिए सरकारी या निजी गाड़ियाँ (बसें, कारें, जीपें) मिलती हैं। जम्मू से श्रीनगर का लगभग 300 कि० मी० का रास्ता एक दिन में पूरा होता है। श्रीनगर से प्रातः यात्रा शुरू होती है। करीब तीन घंटे में हम सोनमर्ग पहुँचते हैं। सोनमर्ग ऊँचे बर्फानी पहाड़ों और देवदार के हरे जंगलों से घिरी एक सुंदर घाटी है। यह कश्मीर के स्वास्थ्यवर्धक स्थानों में से एक है। सैंकड़ों देशी तथा विदेशी पर्यटक वहाँ जाकर तंबुओं तथा होटलों में रहते हैं और घूमते फिरते हैं।

सोनमर्ग से चलकर ज़ोजीला पहाड़ पर कड़ी चढ़ाई शुरू होती है। धीरे–धीरे कश्मीर की हरियाली कम होती जाती है और हमारी यात्रा हिमालय

पार के ऐसे नंगे पहाड़ों पर आगे बढ़ती है जिन पर पेड़–पौधे कुछ नहीं उगते। ज़ोजीला पर्वत का सबसे ऊँचा बिंदु 3505 मीटर ऊँचा है, जहाँ से हमें गुज़रना पड़ता है। ज़ोजीला पार कर हम गुमरी से होते हुए 'द्रास' नामक गाँव पहुँचते हैं। 'द्रास' एक छोटी सी सुंदर घाटी है। इस घाटी में 'द्रास नदी' बहती है जो आगे लाकर करगिल के पास सिंध नदी से जा मिलती है। द्रास नदी के दोनों ओर ऊँचे–ऊँचे पर्वत हैं। सड़क के पार वाले ऊँचे पर्वतों के दूसरी ओर पाक–अधिकृत कश्मीर है। 'द्रास' संसार की दूसरी सबसे कम तापमान वाली बस्ती है।

'द्रास' नदी के साथ–साथ सड़क करगिल की ओर जाती है। करगिल, श्रीनगर और लेह के बीच सबसे बड़ा कस्बा है। इसे हिमालय का द्वार भी

https://byjus.com

कहते हैं। यहाँ से रास्ता पूर्व की ओर मुड़ता है और लेह 234 कि० मी० दूर रह जाता है। करगिल गाड़ियाँ रात के पड़ाव के लिए ठहरती हैं। करगिल से 'सुरू' घाटी तथा 'ज़ंस्कार' को रास्ते जाते हैं। ज़ंस्कार संसार की प्राचीनतम बस्तियों में से एक है। यह बड़ी ठंडी जगह है। यहाँ का तापमान –40° सेलशियस तक गिरता है। ज़ंस्कार में पूरे लद्दाख क्षेत्र के सबसे अधिक गोनपा हैं।

करगिल से आगे ज़ंस्कार शृंखला के पहाड़ हैं। काफी ऊँचाई पर पहुँच कर हम एक विशाल पठार पर से गुज़रते हैं। इस पठार की मिट्टी को एक बड़ी सिंचाई–योजना से उपजाऊ बनाया गया है। हम इस रास्ते पर अगली प्रसिद्ध जगह "मुलबेख" पहुँचते है। यह गाँव भगवान मैत्रेय (बुद्ध) के उस विशाल चित्र के लिए प्रसिद्ध है जो 9 मीटर ऊँची चट्टान पर खुदा हुआ है। यह विशाल चट्टान आने जाने वालों को दूर से ही दिखाई देती है।

मुलबेख से आगे दो ऊँचे पहाड़ी दर्रों से गुज़रना पड़ता है। इनके नाम हैं – नामकीला और फोतूला। नामकीला समुद्रतल से 3719 मीटर और फोतूला 5094 मीटर ऊँचा है। बच्चो, आप इन पहाड़ी रास्तों की ऊँचाई का अनुमान यह जान कर लगा सकते हैं कि जम्मू समुद्रतल से लगभग 225 मीटर ऊँचा है और कश्मीर 1525 मीटर। फोतूला से हमारा वाहन नीचे उतरती और गोलाई में मोड़ काटती सड़क से होता हुआ "लामायूरू" पहुँचता

है। लामायूरू में एक बहुत ही प्रसिद्ध और देखने योग्य गोनपा है। वहाँ से 22 कि० मी० का फासला तय करके और 1219 मीटर की उतराई उतर कर हम 'खलसी' पहुँचते हैं। यहाँ हमारी भेंट लद्दाख की प्रसिद्ध सिंध नदी से होती है। अब हमारा रास्ता उस नदी के किनारे के हरे–भरे सीढ़ी जैसे खेतों से होता हुआ जाता है। खेतों के अगल–बगल सफेदी–पुते घर दिखाई देते हैं। इनकी छतों पर शीतकाल के लिए पशुओं के चारे के अट्टे बने दिखाई देते है। रास्ते पर कहीं किसी पुराने राजा के महल के खंडहर तो कही सड़क से हटकर टीले पर कोई गोनपा नज़र आता है। रास्ते के ऐसे गोनपाओं में आखिरी बड़ा गोनपा है स्पितुक। वहाँ से लद्दाख की राजधानी 'लेह' केवल आठ कि० मी० दूर रह जाती है। बच्चो, लेह को दुनिया की छत कहते हैं क्योंकि यह नगर दुनिया की सबसे ऊँची बस्ती है। यहाँ बहुत ठंड पड़ती है,

https://byjus.com

BYJU'S
The Learning App

पर यहाँ के लोग बड़े परिश्रमी हैं। परिश्रम से ही उन्होंने अपने जीवन को सुंदर बनाया है। लद्दाखी लोग स्वभाव से कोमल और प्रेमी हैं। वे प्रेम और आदर से देश–विदेश के सभी मेहमानों का स्वागत करते हैं। वहाँ हम चाहें तो किसी सरकारी या निजी होटल में रह सकते हैं, चाहें तो "ग्राहक–मेहमान" अर्थात

घरों में पैसा देकर मेहमान की तरह भी रह सकते हैं। ग्राहक–मेहमान बनकर रहने से हम लद्दाख के जीवन को अधिक समीप से देख और समझ सकते हैं।

अभ्यास

1. बताएँ और लिखें :–

क) हमारे राज्य का नाम क्या है और इसके कितने मुख्य भाग हैं ?

....

जम्मू–कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन

ख) लद्दाख हमारे राज्य के किस ओर स्थित हैं ?

....

ग) श्रीनगर से लेह कितना दूर है और जम्मू से कितना ?

....

घ) सोनमर्ग कैसी घाटी है ?

....

च) ज़ोजीला पर्वत कितना ऊँचा है ?

....

छ) करगिल कस्बे से कहाँ–कहाँ रास्ते जाते हैं ?

....

ज) "मुलबेख" किस कारण प्रसिद्ध है ?

....

झ) ज़ंस्कार का जलवायु कैसा है ? उसके विषय में आप क्या जानते हैं?

....

ट) नामकीला और फोतूला दर्रों की ऊँचाई क्या–क्या है ?

....

ठ) करगिल से लेह के रास्ते में सबसे अंतिम गोनपे का क्या नाम हैं ?

....

उद्देश्य:– पाठ–बोध तथा प्रत्यास्मरण।

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

2. पढ़ें, समझें और लिखें :–

रहन–सहन	पेड़–पौधे	रीति–रिवाज
.....	.....	.....
.....	.....	.....

इसी प्रकार के चार और शब्द–युग्म पाठ से खोज कर दो–दो बार लिखें :–

....

....

उद्देश्य :– शब्द–युग्मों से परिचय।

3. समझ कर लिखें :–

लद्दाख	–	लद्दाखी	बर्फ	–	बर्फीला
निवास	–	.....	शर्म	–	.....
सरकार	–	.....	रेत	–	.....
विदेश	–	.....	पत्थर	–	.....

उद्देश्य :– संज्ञा शब्दों से विशेषण शब्द बनाना।

4. पढ़ें, समझें और लिखें :–

जाना	–	जाता हुआ	बहना	–	बहती हुई
काटना	–	.....	उतरना	–	.....
घूमना	–	.....	बढ़ना	–	.....

उद्देश्य :– संज्ञा शब्दों से विशेषण शब्द बनाना।

जम्मू-कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन

5. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करें :–

क) लद्दाख जम्मू कश्मीर राज्य के ..... में स्थित हैं। (उत्तर / पूर्व)

ख) ..... कश्मीर के स्वास्थ्यवर्धक स्थानों में से एक हैं। (सोनमर्ग / ज़ोजिला)

ग) श्रीनगर और लेह के बीच ..... सबसे बड़ा कस्बा है। (जंस्कार / करगिल)

घ) ..... समुद्रतल से 5094 मीटर ऊँचा है। (नामकीला / फोतूला)

च) करगिल से लेह जाते हुए आखिरी बड़ा गोनपा ..... है। (स्पितुक / लामायुरू)

6. "क" स्तंभ में दिए शब्द को "ख" और "ग" स्तंभों के सही शब्दों / वाक्यांशों से जोड़कर सही वाक्य बनाकर लिखें :–

क	ख	ग
लेह	को	हम ग्राहक–मेहमान बनकर रह सकते हैं।
	के लिए	श्रीनगर और जम्मू बहुत लोग आते हैं।
	की	दुनिया की छत कहते हैं।
	से	श्रीनगर से गाड़ियाँ चलती हैं।
	में	दूरी स्पितुक से आठ कि० मी० हैं

..... ।

..... ।

..... ।

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

.....।

.....।

उद्देश्य :– शुद्ध वाक्य–रचना।

7. पढ़ें और लिखें :– ज़ंस्कार दुनिया की सबसे कम तापमान वाली बस्ती है।

.....।

.....।

.....।

.....।

.....।

उद्देश्य :– सुलेख का अभ्यास।

8. श्रुतलेख :–

इलाका, बर्फीला, प्राकृतिक, दृश्य, स्वास्थ्यवर्धक, पर्यटक, मिश्रण, चिह्न, सेलशियस, शृंखला, पठार, मैत्रेय, बुद्ध, प्रसिद्ध, परिश्रमी, ग्राहक।

उद्देश्य :– शुद्ध श्रवण व लेखन का अभ्यास।

9. यदि आप कभी अपने गाँव या शहर से किसी दूसरे गाँव या शहर गए हों, तो उस समय रास्ते में देखी हुई जगहों, लोगों और दृश्यों का वर्णन दस वाक्यों में करें :–

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

उद्देश्य :– योग्यता–विस्तार।

10. शब्दार्थ :–

प्राकृतिक	–	कुदरती
पर्यटक	–	सैलानी
जलवायु	–	आबो–हवा, हवा–पानी
मिश्रण	–	मिलन, मेल
बर्फीला	–	बर्फ से ढका हुआ
अट्टा	–	ऊँचा ढेर
स्वास्थ्यवर्धक	–	सेहत बढ़ाने वाला
उपजाऊ	–	अधिक उपज देने वाला/वाली।

उद्देश्य :– शब्दार्थ –ज्ञान।

https://byjus.com

तवी की आत्मकथा

जलाशय	चट्टान	निर्जन	देवालय	पाट
छावनी	राजमार्ग	शिवालय	श्रद्धा	धाम

मैं तवी हूँ। मेरा जन्म कब हुआ, मुझे नहीं मालूम। जम्मू–कश्मीर राज्य में एक सुंदर स्थल है – भद्रवाह, जिसे "छोटा कश्मीर" भी कहते हैं। भद्रवाह में एक ऊँचे पहाड़ पर "वासुकिकुंड" नामक एक जलाशय है। यही मेरा जन्मस्थान है। जन्म के समय मैं एक छोटे पहाड़ी–नाले के रूप में बहती हूँ। जगह–जगह कई और छोटे–छोटे सुंदर स्रोतों तथा बर्फीले नालों का पानी मुझमें आकर मिलता है। इन से मेरा आकार बढ़ता जाता है। मैं जंगलों और

पहाड़ी चट्टानों को काटते हुए आगे बहती जाती हूँ। खड़ी चट्टानों और निर्जन वनों के बीच मैं अकेली ही गुज़रती हूँ। पशु–पक्षी भी कम ही नज़र आते हैं। जहाँ कहीं थोड़ा समतल है वहाँ मनुष्यों ने मेरे किनारों पर घाट और देवालय बनाए हैं। इन देवालयों में शिव–मंदिर ज़्यादा हैं। ऐसे स्थलों पर मुझे "सूर्य–पुत्री" कहते हैं। कुछ प्राचीन ग्रंथों में मेरा नाम "तविषी" है। 'तविषी' ही आगे चलकर तवी हो गया है। लोगों का विश्वास है कि मेरे स्वच्छ जल में स्नान करने से पाप धुल जाते है।

मैं अनेक पर्वतों को पार करती हुई मानतलाई, विनिसंग और दशालय से होते हुए बहती हूँ। इन तीनों स्थानों पर तीर्थ स्थान हैं, जहाँ सैकड़ों यात्री आकर नहाते हैं और पूजा –अर्चना करते हैं। यहाँ से चलते–चलते मैं सुद्ध महादेव पहुँचती हूँ। सुद्ध महादेव मेरे किनारे पर बसा एक गाँव है। यह

https://byjus.com

BYJU'S
The Learning App

महादेव जी के मंदिर के कारण प्रसिद्ध है। इस तीर्थ स्थान पर हर साल बड़ा मेला लगता है।

सुद्ध महादेव से मैं कहीं समतल तो कहीं ऊबड़–खाबड़ स्थलों पर यात्रा करती हुई देविका पहुँच जाती हूँ। देविका एक पवित्र धाम है। जहाँ लोग नवरात्रों में पूजा–अर्चना करते हैं।

पहाड़ी यात्रा की उछलकूद से थकी मांदी अब मैं कुछ विश्राम करना चाहती हूँ, इसलिए नगरोटा के पास समतल भूमि पाकर उस पर फैल जाती हूँ और मेरी गति धीमी हो जाती है। यहाँ मेरे दाएँ किनारे पर नगरोटा कस्बा बसा है। मैं जगह–जगह बहुत से लोगों को काम में लगे देखकर विस्मय और हर्ष से भर जाती हूँ। मुझे इस बात का हर्ष होता है कि मैं केवल निर्जन स्थानों की ही नहीं बल्कि जन–जन की सेवा करती हूँ। नगरोटा से जम्मू तक मेरा पथ रेतीला है। मेरा पाट कहीं–कहीं सैकड़ों मीटर चौड़ा हो जाता है। यह देखकर मैं पहाड़ी रास्ते की सारी थकान भूल जाती हूँ और पतली धाराओं में बँट कर आराम से आगे बढ़ती हूँ। यहाँ मेरे दाएँ किनारे पर "सीतला माता" का प्राचीन मंदिर अब तक खड़ा है। थोड़ा आगे अपने किनारों पर देश के वीर सेनानियों की आवाजाही देखकर मेरा हृदय हर्ष और गर्व से भर जाता है। साफ–सुंदर छाविनयों की बग़ल में बहना मुझे सदा अच्छा लगता है।

अब मैं एक बहुत बड़े आधुनिक पुल के नीचे से गुज़रती हूँ। यह कश्मीर से आने वाले राजमार्ग को पठानकोट जाने वाले राजमार्ग से मिलाने वाला

एक नया पुल है। नए पुल के साथ ही मेरे बाएँ किनारे पर सिधरा नगरी (नव–जम्मू) बस रही है।

बाढ़ के समय कौन व्याकुल नहीं होता! मैं भी अपने आपको बस में रख नहीं पाती। सन् 1950 की बाढ़ से मेरा आकार इतना फैल गया था कि बाईं ओर मैंने महामाया मंदिर की पहाड़ी को छुआ तो दाईं ओर अमरमहल और मुबारकमंडी वाली पहाड़ी को ऊपर तक अपनी लपेट में ले लिया। पर उसके बाद मैंने अपना रुख बदलना शुरू किया और जम्मू शहर की पहाड़ी के दामन से तथा पीरखोह के पास से गुज़रती हुई बहने लगी। मेरे बाएँ किनारे पर ऐतिहासिक बाहु किला जम्मू के एक महत्त्वपूर्ण चिह्न के रूप में खड़ा इस बात की गवाही दे रहा है कि राजा बाहुलोचन और राजा जांबूलोचन ने वीरता

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

और संकल्प के साथ दो शहर बसाए थे। बाहू किले के आँचल में उधमपुर रेलवे लाइन बिछी है जो निकट भविष्य में यात्रियों को वैष्णो देवी और कश्मीर ले जाएगी।

आज से लगभग तीस वर्ष पहले तक जम्मू शहर केवल दाएँ किनारे की पहाड़ी पर लगभग 40–50 वर्ग किलोमीटर पर बसा हुआ था। अब तो यह फैलकर कई गुणा बढ़ गया है। मंदिरों के इस शहर ने शांति और भाई–चारे की परंपरा को कठिन समय में भी बनाए रखा है। मेरे ऊपर बना पुराना पुल (तवी पुल) नया बनकर शहर की दर्जनों नई बस्तियों को मिलाता है और लोगों की आर्थिक उन्नति में योगदान दे रहा है। पुल से थोड़ा आगे पुराने बिजली घर के पास मेरे तल (भूतल) के नीचे से जम्मू की प्रसिद्ध "रणवीर नहर" गुज़रती है। यह नहर अखनूर के पास चिनाब नदी से निकलकर रणवीरसिंह पुरा तक भूमि को सींचती है।

जम्मू शहर से निकलकर मैं दो शाखाओं "निक्की तवी" और "बड़ी तवी" में बंट जाती हूँ। "निक्की तवी" के रूप में मैं मंडाल, सोहंजना, मकवाल से गुज़रती हुई चिनाब से जा मिलती हूँ और "बड़ी तवी" के रूप में भगतपुर से होते हुए चिनाब में ही गिर कर अपनी यात्रा समाप्त करती हूँ।

अभ्यास

1. बताएँ और लिखें :–

क) भद्रवाह को किस नाम से जाना जाता है ?

.....

ख) तवी का जन्मस्थान कहाँ है ?

.....

ग) तवी का पुराना नाम क्या है ?

.....

घ) तवी के पानी की गति किस स्थान से धीमी होने लगती है ?

.....

उद्देश्य :– पाठ–बोध तथा प्रत्यास्मरण।

2. सही कथन के सामने ✓ तथा गलत कथन के सामने X लगाएँ :–

क) भद्रवाह जम्मू–कश्मीर राज्य का सुंदर स्थल है। [ ]

ख) जन्म के समय तवी का आकार बहुत बड़ा होता है। [ ]

ग) तवी के किनारों पर कई प्रसिद्ध तीर्थ स्थान बने हैं। [ ]

घ) सुद्ध महादेव तवी के किनारे पर बसा एक गाँव है। [ ]

च) बाढ़ के समय तवी का आकार घट जाता है। [ ]

उद्देश्य :– सही और गलत का विवेक।

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

3. पढ़ें, समझें और लिखें :–

देवालय –	देव + आलय	शिवालय –	शिव + आलय
.....	....	.....	....
हिमालय –	हिम + आलय	दशालय –	दश + आलय
.....	....	.....	....

उद्देश्यः– संधि–ज्ञान।

4. सही शब्दों से वाक्य पूरे करें :–

जलाशय, नाले, तवी, पर्वतों, सुद्ध महादेव।

क) ..... तवी के किनारे पर बसा एक गाँव है।

ख) भद्रवाह में एक ऊँचे पहाड़ पर वासुकिकुंड नामक एक .....है।

ग) तवी को अपनी यात्रा में अनेक ..... से गुज़रना पड़ता है।

घ) जन्म के समय तवी छोटे ..... के रूप में बहती है।

च) बाढ़ के समय ..... अपने आपको बस में नहीं रख पाती।

उद्देश्य :– उपयुक्त शब्दों से वाक्य पूर्ति।

5. पढ़ें, समझें और लिखें :–

सुंदर	.....	पहुँच	.....
कुंड	.....	दाँया	.....
जंगल	.....	ऊँट	.....

मंगल	.....	ऊँचा	.....
चंचल	.....	हूँ	.....
अंग	.....	जहाँ	.....

उद्देश्यः– अनुस्वार (ं) तथा अनुनासिकता (ँ) का ज्ञान।

6. पढ़ें और लिखें :–

प्राचीन ग्रंथो में तवी का नाम तविषी बताया गया है।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7. क) जम्मू–कश्मीर की चार प्रसिद्ध नदियों के नाम लिखें ।

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....

ख) तवी नदी क किनारे पर स्थित महामाया बन जाने का कार्यक्रम बनाएँ

उद्देश्यः– योग्यता–विस्तार।

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

8. पढ़ें और समझें :–

जलाशय	–	झील, तालाब, सोता, चश्मा
चट्टान	–	पत्थर का बड़ा खंड, शिला
निर्जन	–	जिस स्थान में कोई मनुष्य न हो
देवालय	–	देवस्थान, मंदिर
पाट	–	विस्तार, फैलाव, चौड़ाई
छावनी	–	सेना के रहने–ठहरने की जगह
राजमार्ग	–	राजपथ, मुख्यमार्ग

उद्देश्यः– शब्दार्थ–ज्ञान।

मन के भोले–भाले बादल

झब्बर–झब्बर बालों वाले
गुब्बारे से गालों वाले
लगे दौड़ने आसमान में
झूम–झूम कर काले बादल।

कुछ जोकर–से तोंद फुलाए
कुछ हाथी–से सूँड उठाए
कुछ ऊँटों–से कूबड़ वाले
कुछ परियों–से पंख लगाए

आपस में टकराते रह–रह
भोरों से मतवाले बादल।

कुछ तो लगते हैं तूफानी
कुछ रह–रह करते शैतानी
कुछ अपने थैलों से चुपके
झर–झर–झर बरसाते पानी

नहीं किसी की सुनते कुछ भी
ढोलक–ढोल बजाते बादल।

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

रह–रहकर छत पर आ जाते

फिर चुपके ऊपर उड़ जाते

कभी–कभी ज़िद्दी बन करके

बाढ़ नदी–नालों में लाते

फिर भी लगते बहुत भले हैं

मन के भोले–भाले बादल।

कल्पनाथ सिंह

तुम्हारी समझ से

कभी कभी ज़िद्दी बन करके

बाढ़ नदी–नालों में लाते

(क) बादल नदी–नालों में बाढ़ कैसे लाते होंगे ?

नहीं किसी की सुनते कुछ भी

ढोलक–ढोल बजाते बादल

(ख) बादल ढोल कैसे बजाते होंगे ?

कुछ तो लगते हैं तुफानी

कुछ रह–रह करते शैतानी

(ग) बादल कैसी शैतानियाँ करते होंगे ?

कैसा–कौन

	कैसा	कौन
सूरज–सी	चमकीली	थाली
चंदा–सा	.....	.....
हाथी–सा	.....	.....
जोकर–सा	.....	.....
परियों–सा	.....	.....
गुब्बारे–सा	.....	.....
ढोलक–सा	.....	.....

कविता से आगे

(क) तूफान क्या होता है ? बादलों को तूफानी क्यों कहा गया है ?

(ख) साल के किन–किन महीनों में ज़्यादा बादल छाते हैं ?

(ग) कविता में 'काले' बादलों की बात की गई है। क्या बादल सचमुच काले होते हैं ?

(घ) कक्षा में बातचीत करो और बताओ कि बादल किन–किन रंगों के होते हैं।

कैसे–कैसे बादल

(क) तरह–तरह के बादलों के चित्र बनाओ।

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

काले–काले डरावने	गुब्बारे–से गालों वाले
हल्के–फुल्के सुहाने	

(ख) कविता में बादलों को 'भोला' कहा गया है। इसके अलावा बादलों के लिए और कौन–कौन से शब्दों का इस्तेमाल किया गया है ? नीचे लिखे अधूरे शब्दों को पूरा करो।

म..... ज़ि.....

शै..... तू .....

बारिश की आवाज़ें

कुछ अपने थैलों से चुपके

झर–झर–झर बरसाते पानी

पानी के बरसने की आवाज़ है झर–झर–झर!

पानी बरसने की कुछ और आवाज़ें लिखो।

....

....

....

कैसे–कैसे पेड़ बादलों की तरह पेड़ भी अलग–अलग आकार के होते हैं। कोई बरगद–सा फैला हुआ और कोई नारियल के पेड़ जैसा ऊँचा और सीधा।

अपने आसपास अलग–अलग तरह के पेड़ देखो। तुम्हें उनमें कौन–कौन से आकार दिखाई देते हैं ? सब मिलकर पेड़ों पर एक कविता भी तैयार करो।

https://byjus.com

किरमिच की गेंद

गर्मी की छुट्टियाँ थीं। दोपहर के समय दिनेश घर में बैठा कोई कहानी पढ़ रहा था। तभी पेड़ के पत्तों को हिलाती हुई कोई वस्तु धम से घर के पीछे वाले बगीचे में गिरी। दिनेश आवाज़ से पहचान गया कि वह वस्तु क्या हो सकती है। वह एकदम से उठकर बरामदे की चिक सरका कर बगीचे की ओर भागा।

"अरे अरे, बेटा कहाँ जा रहा है ? बाहर लू चल रही है।" दिनेश की माँ मशीन चलाते–चलाते एकदम ज़ोर से बोलीं। परंतु दिनेश रुका नहीं। उसने पैरों में चप्पल भी नहीं पहनी। जून का महीना था। धरती तवे की तरह तप रही थीं पर दिनेश को पैरों के जलने की भी चिंता नहीं थीं वह जहाँ से आवाज़ आई थी, उसी ओर भाग चला।

सामने की क्यारी में भिंडियों के ऊँचे–ऊँचे पौधे थे। एक ओर सीताफल की घनी बेल फेली हुई थी। क्यारियों के चारों ओर हरे–हरे केले के वृक्ष लहरा रहे थे। दिनेश ने जल्दी–जल्दी भिंडियों के पौधों को उलटना–पलटना आरंभ कियां वहाँ कुछ नहीं मिला तो उसने सारी सीताफल की बेल छान मारी।

बराबर में ही घूँस ने गड्ढे बना रखे थे। ढूँढते–ढूँढते जब उसकी निगाह उधर गई तो उसने देखा कि गड्ढे के ऊपर ही एक बिल्कुल नई चमचमाती किरमिच की गेंद पड़ी है।

दिनेश ने हाथ बढ़ा कर गेंद उठा ली। लगता था जैसे किसी ने उसे आज ही बाज़ार से खरीदा है। उसने उसे उलट–पलटकर देखा परंतु कुछ भी समझ में नहीं आया। नज़र उठाकर उसने पास की तिमंज़िली इमारत की ओर देखा कि हो सकता है किसी बच्चे ने इसे ऊपर से फेंका हो परंतु उस इमारत के इस ओर खुलने वाले सभी दरवाज़े और खिड़कियाँ बंद थे। छत की मुँडेर से लेकर नीचे तक तेज़ धूप चिलचिला रही थी। फिर कौन खरीद सकता है नई गेंद ? दिनेश ने सुधीर, अनिल, अरविंद, आनंद, दीपक–सभी के नाम मन में दोहराए। यदि गेंद खरीदी भी है तो इस दोपहरी में इसे नीचे कौन फेंकेगा!

हो न हो, यह गेंद यह गेंद बाहर से ही आई है। उसने सड़क पर बने गोल चक्कर के बगीचे की ओर देखा परंतु वहाँ पर केवल दो–चार गायें ही दिखाई पड़ीं जो पेड़ों के नीचे सुस्ता रही थीं। उसे ध्यान आया कि जाने कितनी बार अपने मोहल्ले के बच्चों की गेंदें किक्रेट खेलते हुए दूर चली गई और फिर कभी नहीं मिलीं। एक बार तो एक गेंद एक चलते हुए ट्रक में भी जा पड़ी थी।

https://byjus.com

तभी भीतर से माँ की आवाज़ आई, "अरे दिनेश, तू सुनेगा नहीं ? सब अपने–अपने घरों में सो रहे हैं और तू धूप में घूम रहा है।"

दिनेश गेंद को हाथ में लिए हुए भीतर आ गया। ठंडे फर्श पर बिछी चटाई पर वह लेट गया और सोचने लगा– भले ही यह गेंद मोहल्ले में से किसी की न हो, परंतु ईमानदारी इसी में है कि एक बार सबसे पूछ लिया जाए। गर्मी की छुट्टियाँ थीं। बच्चों ने खेलने की सुविधा को ध्यान में रखते हुए एक क्लब बनाया हुआ था उस क्लब में सभी बच्चों के लिए बल्ले थे और गेंद खरीदने के लिए वे आपस में क्लब का चंदा देकर पैसे इकट्ठा कर लेते थे।

शाम को सारे बच्चे इकट्ठा हुए। दिनेश ने सभी से पूछा, "मुझे एक गेंद मिली है। अगर तुममें से किसी की गेंद खो गई हो, तो वह गेंद की पहचान बताकर गेंद मुझसे ले सकता है।"

तभी अनिल बोला, "गेंद तो मेरी खो गई है।"

"कब खोई थी तेरी गेंद?"

"यही कोई चार महीने पहले।"

"तो वह गेंद तेरी नहीं है", दिनेश ने कहा।

"फिर वह मेरी होगी", सुधीर ने तुरंत उस पर अपना अधिकार जताते हुए कहा।

"वह कैसे", दिनेश ने पूछा।

"तू मुझे गेंद दिखा दे, मैं अपनी निशानी बता दूँगा।"

"वाह! यह कैसे हो सकता है?" दिनेश बोला, "गेंद देखकर निशानी बताना कौन–सा कठिन है! बिना देखे बता, तब जानू।"

तभी ऊपर से दीपक उतर आया। दीपक अपना मतलब सिद्ध करने तथा अवसर पड़ने पर सभी को मित्र बना लेने में चतुर था। गेंद की बात सुनकर दीपक बोला, "गेंद मेरी है।"

"कैसे तेरी है?" सभी ने एक साथ पूछा, "कल ही तो तू कह रहा था कि इस बार तेरे पापा तुझे गेंद लाने के लिए पैसे नहीं दे रहे हैं।"

"मेरी गेंद तो पाँच महीने पहले खोई थी", दीपक ने कहा, "जब बड़े भैया की शादी हुई थी न, तभी सुनील ने मेरी गेंद छत पर से नीचे फेंक दी थी।" दिनेश अच्छी तरह जानता था कि यह गेंद दीपक की नहीं है। दीपक की गेंद पाँच महीने पहले खोई थी। और यह कभी हो ही नहीं सकता कि गेंद पाँच–छह महीने पड़ी रहे और उस पर मिट्टी का एक भी दाग न लगे।

दीपक ने कहा, "मैं कुछ नहीं जानता। गेंद मेरी है। वह मेरी है और सिर्फ मेरी है।"

"अरे, जा जा, बड़ा आया गेंदवाला! क्या सबूत है कि यही गेंद नीचे फेंकी थी", अनिल ने पूछा।

https://byjus.com

BYJU'S
The Learning App

दीपक ने कहा, "हाँ, सबूत है। मुझे गेंद दिखा दो, मैं फौरन बता दूँगा"

दिनेश ने देखा कि झगड़ा बढ़ रहा है। गेंद हथियाने के लिए दीपक सुधीर और सुनील का सहारा ले रहा है।

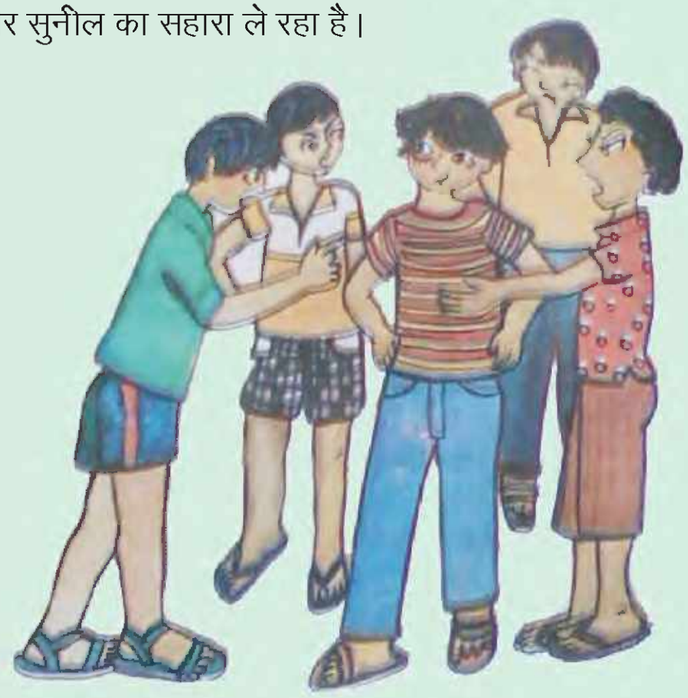

वह जानता था कि यदि गेंद दीपक के पास चली गई तो ये तीनों मिलकर खेलेंगे।

"अच्छा मैं गेंद ला रहा हूँ। परंतु जब तक पक्का सबूत नहीं मिलेगा, मैं किसी को दूँगा नहीं", दिनेश ने कहा।

गेंद आ गई। दीपक उसे देखते ही बोला, "यह मेरी है, यही है मेरी गेंद। यह लाल रंग का निशान मेरी ही गेंद पर था।"

"वाह! सभी गेंदों पर ऐसे ही निशान होते हैं", अनिल ने दिनेश का साथ देते हुए कहा।

दीपक ने फिर ज़ोर लगाया, "मैं अपने पापा से कहलवा सकता हूँ कि गेंद मेरी है।"

"अरे जा, ऐसे तो मैं अपने बड़े भाई से कहलवा सकता हूँ कि गेंद दिनेश की है!" अनिल ने कहा।

"कुछ भी हो गेंद मेरी है", दीपक ने उसे धरती पर मारते हुए कहा "धरती पर टप्पा पड़ते हुए मेरी गेंद में से ऐसी ही आवाज़ आती थी।"

"मेरे साथ बाज़ार चल दुकानों पर जितनी गेंदें हैं, सभी के टप्पे की आवाज़ ऐसी ही होगी", अनिल ने फिर उसकी बात काट दी।

"अच्छी बात है, तो मैं इसे सड़क पर फेंक दूँगा। देखूँ कैसे कोई खेलेगा!" दीपक ने जैसे ही गेंद को सड़क पर फेंकने के लिए हाथ उठाया कि अनिल और दिनेश ने उसे पकड़ लिया। अब दीपक ने रुआँसे होते हुए अपना अंतिम हथियार आज़माया बोला, "या तो गेंद मुझे दे दो, नहीं तो मैं इसके पैसे सुनील से लूँगा।"

अब तो सुनील, दीपक और सुधीर का गुट मज़बूत होने लगा था। तीनों का ही कहना था कि गेंद दीपक की है और उसे ही मिलनी चाहिए।

दिनेश तब तक चुप था। वास्तव में दिनेश का मन उस समय सबके साथ मिलकर उस गेंद से खेलने को कर रहा था। बोला, "अब चुप भी रहो

https://byjus.com

झगड़ा बाद में कर लेंगे। अपने–अपने बल्ले ले आओ, पहले खेल लें।"

पाँच मिनट के भीतर ही खेल आरंभ हो गया। दिनेश बल्लेबाजी कर रहा था। अभी दो–चार बार ही खेला था कि वह चमकदार नई गेंद एकदम ज़ोर से उछली और दरवाज़ा पार कर सड़क पर जाते हुए एक स्कूटर में बनी सामान रखने की जालीदार टोकरी में जा गिरी। स्कूटर वाले को शायद पता भी नहीं चला। तेज़ी से चलते हुए स्कूटर के साथ गेंद भी चली गई। बच्चे पहले तो चिल्लाते हुए स्कूटर के पीछे भागे, परंतु जल्दी ही सब रुक गए। वे समझ गए थे कि स्कूटर के पीछे भागना बेकार है। एक पल के लिए सभी ने एक–दूसरे की ओर देखा और फिर सभी ठहाका मार कर हँस पड़े।

शांताकुमारी जैन

कहानी की बात

(क) दिनेश की माँ मशीन चलाते–चलाते बोली, "बेटा, कहाँ जा रहे हो?"

– दिनेश की माँ कौन–सी मशीन चला रही होगी ?

– तुमने इस मशीन को कहाँ–कहाँ देखा है?

(ख) दिनेश ने सारी सीताफल की बेल छान मारी।

– दिनेश क्या खोज रहा था ?

– दिनेश को कैसे पता चला होगा कि क्यारी में वही चीज़ गिरी है ?

(ग) दिनेश अच्छी तरह जानता था कि गेंद दीपक की नहीं है।

– दिनेश को यह बात कैसे पता चली कि गेंद दीपक की हो ही नहीं सकती ?

– दीपक बार–बार गेंद को अपनी क्यों बता रहा होगा ?

गेंद किसकी

(क) दीपक ने गेंद को अपना बताने के लिए उसके बारे में कौन–कौन सी बातें बताईं ?

(ख) अगर दीपक और दिनेश गेंद के बारे में फैसला करवाने तुम्हारे पास आते, तो तुम गेंद किसे देती ? यह भी बताओ कि तुम यह फैसला किन बातों को ध्यान में रखकर करती ? गेंद की कहानी गेंद स्कूटर के साथ

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

कहीं चली गई। उसके बाद गेंद के साथ क्या–क्या हुआ होगा ? सोचकर बताओ।

पहचान

मान लो तुम्हारा कोई खिलौना घर में ही कहीं खो गया है। तुमने अपने साथियों को घर में ही कहीं खो दिया हो। तुमने अपने साथियों को घर पर बुलाया है ताकि सब मिलकर उसे खोज लें।

तुम अपने खिलौने की पहचान के लिए अपने साथियों को कौन–कौन सी बातें बताओगे ? लिखो।

.....

.....

.....

.....

.....

कहाँ

सामने की क्यारी में भिंडियों के ऊँचे–ऊँचे पौधे थे।

एक ओर सीताफल की घनी बेल फैली हुई थी।

सीताफल की बेल होती है और भिंडी का पौधा। बताओ और कौन – कौन सी सब्ज़ियाँ बेल और पौधे पर लगती हैं ?

बेल	पौधा
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

तरह–तरह की गेंद

गेंदों के अनेक रंग–रूप होते हैं। अलग–अलग खेलों में अलग–अलग प्रकार की गेंदों का इस्तेमाल किया जाता है। नीचे दी गई जगह में खेलों के अनुसार गेंदों की सूची बनाओ।

क्रिकेट	किरमिच
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

खोजो आस–पास

दिनेश चिक सरकाकर बरामदे की ओर भागा।

(क) चिक पर्दे का काम करती है पर चिक और पर्दे में फर्क होता है। इन दोनों

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

में क्या अंतर है ? समूह में चर्चा करो। इसी तरह पता लगाओ कि इन शब्दों में क्या अंतर है ?

टहनी–तना	पेड़–पौधा
घूँस–चूहा	मुँडेर–चारदीवारी

(ख) चिक सरकंडे से भी बनती है और तीलियों से भी। सरकंडे से और क्या–क्या बनता है ? अपने आसपास पता करो और लिखो।

....

....

क्लब बनाएँ

मान लो तुम्हें अपने स्कूल में एक क्लब बनाना है जो स्कूल में खेल–कूद के कार्यक्रमों की तैयारी करेगा।

– इस क्लब में शामिल होने और इसको चलाने आदि के बारे में नियम सोचकर लिखो।

– तुम्हारे विचार से इस क्लब को अच्छी तरह चलाने के लिए नियमों की ज़रूरत है या नहीं ? अपने जवाब का कारण भी बताओ।

एक, दो, तीन

दिनेश ने तिमंज़िली इमारत की ओर देखा।

जिस इमारत में तीन मंज़िलें हो, उसे तिमंज़िली इमारत कहते हैं।

बताओं, इन्हें क्या कहेंगे ?

जिस मकान में दो मंज़िलें हो .....

जिस स्कूटर में दो पहिए हों .....

जिस झंडे में तीन रंग हों .....

जिस जगह पर चार राहें मिलती हों .....

जिस स्कूटर में तीन पहिए हों .....

सब्ज़ी एक नाम अनेक

एक ही सब्ज़ी या फल के नाम अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग होते हैं। नीचे ऐसे कुछ नाम दिए गए हैं।

सीताफल	कांदा	बटाटा	अमरूद
तोरी	शरीफा	काशीफल	बैंगन
नेनुआ	तरबूज	कुम्हड़ा	घीया

– बताओ कि तुम्हारे घर, शहर या कस्बे में इनमें से कौन–कौन से शब्द इस्तेमाल किए जाते हैं ?

– बाकी नामों का इस्तेमाल किन–किन स्थानों पर होता है ? पता करो।

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

दोस्त की पोशाक

एक बार नसीरूद्दीन अपने बहुत पुराने दोस्त जमाल साहब से मिले। अपने पुराने दोस्त से मिलकर वे बड़े खुश हुए। कुछ देर गपशप करने के बाद उन्होंने कहा, "चलो दोस्त, मोहल्ले में घूम आएँ।"

जमाल साहब ने जाने से मना कर दिया और कहा, "अपनी इस मामूली सी पोशाक में मैं लोगों से नहीं मिल सकता।"

नसीरूद्दीन ने कहा, "बस इतनी सी बात!"

नसीरूद्दीन तुरंत उनके लिए अपनी एक भड़कीली अचकन निकाल कर लाए और कहा, "इसे पहन लो। इसमें तुम खूब अच्छे लगोगे। सब देखते रह जाएँगे।

बनठन कर दोनों घूमने निकले। दोस्त को लेकर नसीरूद्दीन पड़ोसी के

घर गए नसीरूद्दीन ने पड़ोसी से कहा, "ये हैं मेरे खास दोस्त, जमाल साहब। आज कई सालों बाद इनसे मुलाकात हुई है। वैसे जो अचकन इन्होंने पहन रखी है, वह मेरी है।"

यह सुनकर जमाल साहब पर तो मानो घड़ों पानी पड़ गया। बाहर निकलते ही

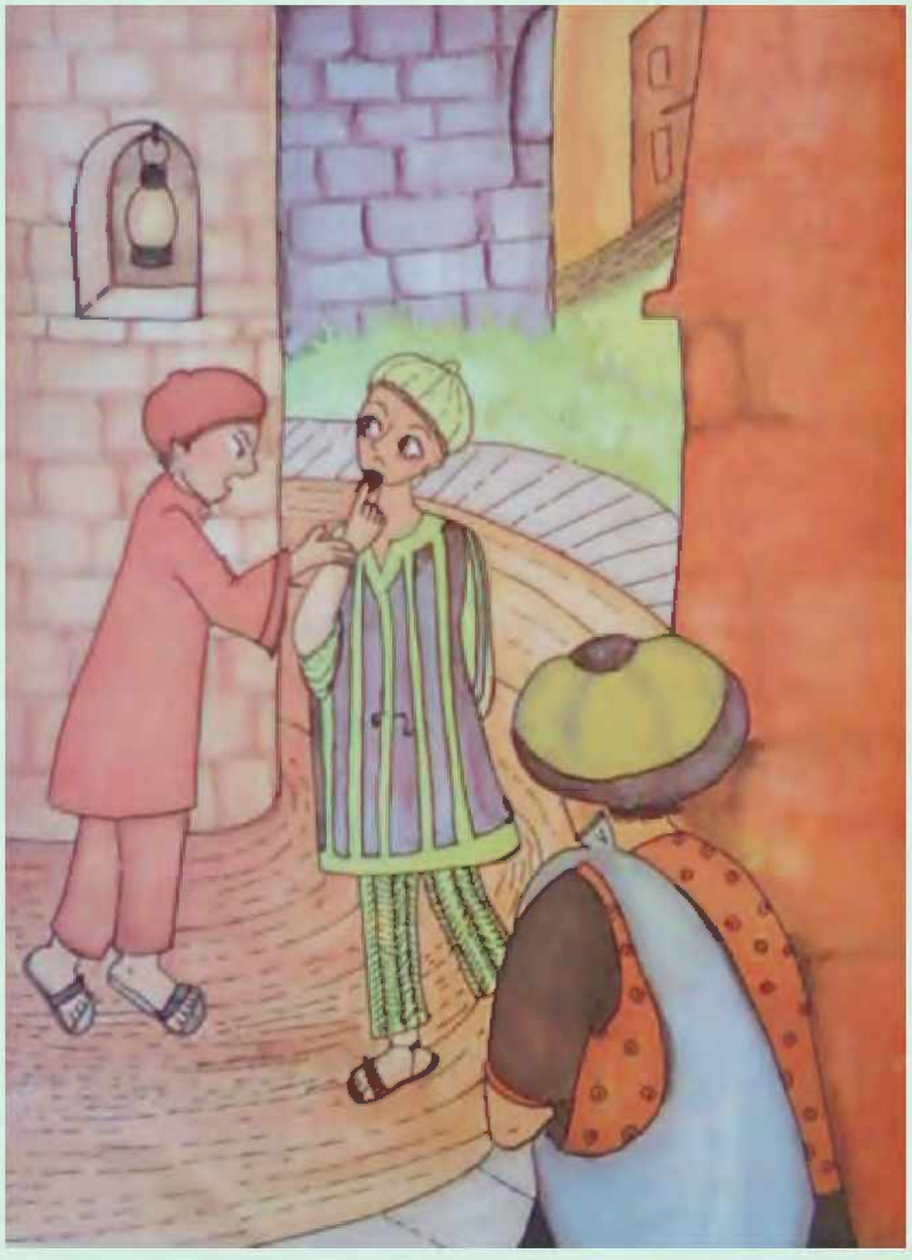

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

मुँह बनाकर उन्होंने नसीरूद्दीन से कहा, "तुम्हारी कैसी अकल है! क्या यह बताना ज़रूरी था कि यह अचकन तुम्हारी है ? तुम्हारा पड़ोसी सोच रहा होगा कि मेरे पास अपने कपड़े हैं ही नहीं।"

नसीरूद्दीन ने माफी माँगते हुए कहा, "गलती हो गई। अब ऐसा नहीं कहूँगा।"

अब नसीरूद्दीन उन्हें हुसैन साहब से मिलवाने ले गए। हुसैन साहब ने गर्मजोशी से उनका स्वागत सत्कार किया। जब जमाल साहब के बारे में पूछा तो नसीरूद्दीन ने कहा, "जमाल साहब मेरे पुराने दोस्त हैं और इन्होंने जो अचकन पहनी है वह इनकी अपनी ही है।"

जमाल साहब फिर नाराज़ हो गए। बाहर आकर बोले, "झूठ बोलने को किसने कहा था तुमसे?"

"क्यों?" नसीरूद्दीन ने कहा, "तुमने जैसा चाहा, मैंने वैसा ही तो कहा।"

"पोशाक की बात कहे बिना काम नहीं चलता क्या ? उसके

बारे में न कहना ही अच्छा है" जमाल साहब ने समझाया।

जमाल साहब को लेकर नसीरूद्दीन आगे बढ़े। तभी एक अन्य पड़ोसी मिल गए। नसीरूद्दीन ने जमाल साहब का परिचय उनसे करवाया, "मैं आपका परिचय अपने पुराने दोस्त से करवा दूँ। यह हैं जमाल साहब और इन्होंने जो अचकन पहनी है उसके बारे में मैं चुप ही रहूँ तो अच्छा है।"

तुम्हारे सवाल

कहानी के बारे में कोई पाँच प्रश्न बनाकर नीचे दी गई जगह में लिखो। कॉपी में उनके उत्तर लिखो।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

तुम्हारी बात

नसीरूद्दीन और जमाल साहब बनठन कर घूमने के लिए निकले।

(क) तुम बनठन कर कहाँ–कहाँ जाते हो ?

(ख) तुम किस–किस तरह से बनते–ठनते हो ?

तुम्हारी समझ से

(क) तीसरे मकान से बाहर निकलकर जमाल साहब ने नसीरूद्दीन से क्या कहा होगा ?

(ख) जमाल साहब अपने मामूली से कपड़ों में घूमने क्यों नहीं जाना चाहते होंगे?

(ग) नसीरूद्दीन अपनी अचकन के बारे में हमेशा क्यों बताते होंगे ?

गपशप

जब जमाल साहब और नसीरूद्दीन हुसैन साहब के घर से बाहर निकले तो उन्होंने अपनी बेगम को नसीरूद्दीन और जमाल साहब से मुलाकात का किस्सा सुनाया। उन दोनों के बीच में क्या बातचीत हुई होगी ? लिखकर बताओ।

बेगम – कौन आया था ?

हुसैन साहब – नसीरूद्दीन अपने दोस्त के साथ आया था।

बेगम – .....

घूमना–फिरना

नसीरूद्दीन ने कहा, चलो दोस्त, मोहल्ले में घूम आएँ।

जब नसीरूद्दीन अपने दोस्त से मिले, वे उसे अपना मोहल्ला दिखाने ले गए।

जब तुम अपने दोस्तों से मिलते हो, तब क्या–क्या करते हो ?

करके दिखाओ

नीचे कुछ वाक्य लिखे हैं। तुम्हें इनका अभिनय करना है। तुम चाहो तो कहानी में देख सकते हो कि इन कामों का ज़िक्र कहाँ आया है।

- बनठन कर घूमने के लिए निकलना।
- घड़ों पानी पड़ना।
- मुँह बनाकर शिकायत करना।
- गर्मजोशी से स्वागत करना।
- नाराज़ होना।
- देखते ही रह जाना।

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

घड़ों पानी पड़ना

नसीरूद्दीन की बात सुनकर जमाल साहब पर तो मानो घड़ों पानी पड़ गया।

(क) घड़ों पानी पड़ना एक मुहावरा है। इसका क्या मतलब हो सकता है ? पता लगाओ। तुम इसका मतलब पता करने के लिए अपने साथियों या बड़ों से बातचीत कर सकते हो या शब्दकोश देख सकते हो।

(ख) इस मुहावरे को सुनकर मन में एक चित्र सा बनता है। तुम भी किन्हीं दो मुहावरों के बारे में चित्र बनाओ। कुछ मुहावरे हम दे देते हैं। तुम चाहो तो इनमें से कोई पसंद कर सकते हो–

- सिर मुंडाते ही ओले पड़ना
- ऊँट के मुँह में जीरा
- दीए तले अँधेरा
- ईद का चाँद

कौन है कैसा

नसीरूद्दीन एक भड़कीली अचकन निकालकर लाए।

भड़कीली शब्द बता रहा है कि अचकन कैसी थी। कहानी में से ऐसे ही और शब्द छाँटो जो किसी के बारे में कुछ बताते हों। उन्हें छाँटकर नीचे दी गई जगह में लिखो।

देखें, कौन सबसे ज़्यादा ऐसे शब्द ढूँढ़ पाता है।

पुराना दोस्त	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

भड़कीली, पुराना जैसे शब्द किसी के बारे में कुछ खास या विशेष बात बता रहे हैं। इसलिए इन्हें विशेषण कहते हैं।

पास–पड़ोस

पड़ोस के घर में जाकर नसीरूद्दीन पड़ोसी से मिले।

तुम अपने पड़ोसी बच्चों के साथ बहुत–से खेल खेलते हो। पर क्या तुम उनके परिवार के बारे में जानते हो ?

चलो, दोस्तों के बारे में और जानकारी इकट्ठी करते हैं। यदि तुम चाहो तो उनसे ये बातें पूछ सकते हो–

- घर में कुल कितने लोग हैं ?
- उनके नाम क्या हैं ?
- उनकी आयु क्या हैं ?
- वे क्या काम करते हैं ?

इस सूची में तुम अपने मन से बहुत–से सवाल जोड़ सकते हो।

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

शब्दों का हेरफेर

झूठा – जूठा

इन शब्दों को बोलकर देखो। ये मिलती–जुलती आवाज़ वाले शब्द हैं। ज़रा से अंतर से भी शब्द का अर्थ बदल जाता है।

नीचे इसी तरह के कुछ शब्दों के जोड़े दिए गए हैं। इन सबके अर्थ अलग–अलग हैं। इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो।

घड़ा – गढ़ा	घूम – झूम	राज – राज़
फ़न – फन	सजा – सज़ा	खोल – खौल

दान की हिसाबनीति

एक था राजा। राजा जी लकदक कपड़े पहनकर यूं तो हज़ारों रुपए खर्च करते रहते थे, पर दान के वक्त उनकी मुट्ठी बंद हो जाती थी।

राजसभा में एक से एक नामी लोग आते रहते थे, लेकिन गरीब, दुखी, विद्वान, सज्जन इनमें से कोई भी नहीं आता था क्योंकि वहाँ पर इनका बिल्कुल सत्कार नहीं होता था।

एक बार उस देश में अकाल पड़ गया। पूर्वी सीमा के लोग भूखे–प्यासे मरने लगे। राजा के पास खबर आई। वे बोले, "यह तो भगवान की मार है, इसमें मेरा कोई हाथ नहीं है।"

लोगों ने कहा, "महाराज, राजभंडार से हमारी सहायता करने की कृपा करें, जिससे हम लोग दूसरे देशों से अनाज खरीदकर अपनी जान बचा सकें।"

राजा ने कहा, "आज तुम लोग अकाल से पीड़ित हो, कल पता चलेगा

कहीं भूकंप आया है। परसों सुनूँगा, कहीं के लोग बड़े गरीब हैं, दो वक्त की रोटी नहीं

https://byjus.com

BYJU'S
The Learning App

जुटती। इस तरह सभी की सहायता करते–करते जब राजभंडार खत्म हो जाएगा तब खुद मैं ही दिवालिया हो जाऊँगा।" यह सुनकर सभी निराश होकर लौट गए। इधर अकाल का प्रकोप फेलता ही जा रहा था। न जाने रोज़ कितने ही लोग भूख से मरने लगे। फिर राजा के पास पहुँचे। उन्होंने राजसभा में गुहार लगाई, "दुहाई महाराज! आपसे ज़्यादा कुछ नहीं चाहते, सिर्फ दस हज़ार रूपए हमें दे दें तो हम आधा पेट खाकर भी ज़िंदा रह जाएँगे।"

राजा ने कहा, "दस हज़ार रुपए भी क्या तुम्हें बहुत कम लग रहे हैं ? और उतने कष्ट से जीवित रहकर लाभ ही क्या है!"

एक व्यक्ति ने कहा, "भगवान की कृपा से लाखों रुपए राजकोष में मौजूद हैं। जैसे धन का सागर हो। उसमें से एक–आध लोटा ले लेने से महाराज का क्या नुकसान हो जाएगा!"

राजा ने कहा, "राजकोष में अधिक धन है तो क्या उसे दोनों हाथों से लुटा दूँ?"

एक अन्य व्यक्ति ने कहा, "महल में प्रतिदिन हज़ारों रुपए इन सुगंधित वस्त्रों, मनोरंजन और महल की सजावट में खर्च होते हैं। यदि इन रुपयों में से ही थोड़ा–सा धन ज़रूरतमंदों को मिल जाए तो उन दुखियों की जान बच जाएगी।"

यह सुनकर राजा को क्रोध आ गया। वह गुस्से से बोला, "खुद भिखारी होकर मुझे उपदेश दे रहे हो ? मेरा रुपया है, मैं चाहे उसे उबालकर खाऊँ चाहे तलकर मेरी मर्ज़ी। तुम अगर इसी तरह बकवास करोगे तो मुश्किल में पड़ जाओगे। इसलिए इसी वक्त तुम चुपचाप खिसक जाओ।"

राजा का क्रोध देखकर लोग वहाँ से चले गए।

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

जा रहा है। यह देखकर उन्हें उलझन महसूस होने लगी। महाराज तो कभी किसी को इतना दान नहीं देते थे। उसने यह बात मंत्री को बताई।

मंत्री ने कुछ सोचते हुए कहा, "वाकई, यह बात तो पहले ध्यान में ही नहीं आई थी। मगर अब कोई उपाय भी नहीं है। महाराज का हुक्म बदला नहीं जा सकता।"

इसके बाद फिर कुछ दिन बीते। भंडारी फिर हड़बड़ाता हुआ मंत्री के पास पूरा हिसाब लेकर आ गया। हिसाब देखकर मंत्री का चेहरा फीका पड़ गया।

वह अपना पसीना पोंछकर, सिर खुजलाकर, दाढ़ी में हाथ फेरते हुए बोला, "यह क्या कह रहे हो! अभी से इतना धन चला गया है! तो फिर बीस दिनों के अंत में कितने रुपए होंगे ?

भंडारी बोला, "जी, पूरा हिसाब तो नहीं किया है।"

मंत्री ने कहा, "तो तुरंत बैठकर, अभी पूरा हिसाब करो।"

भंड़ारी हिसाब करने बैठ गया। मंत्री महाशय अपने माथे पर बर्फ की

राजा हँसते हुए बोला, "छोटा मुँह बड़ी बात! अगर सौ–दो सौ रुपए होते तो एक बार सोच भी सकता था। पहरेदारों की खुराक दो–चार दिन कम

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

पट्टी लगाकर तेज़ी से पंखा झलवाने लगे।

कुछ ही देर में भंडारी ने पूरा हिसाब कर लिया।

मंत्री ने पूछा, "कुल मिलाकर कितना हुआ ?"

भंडारी ने हाथ जोड़कर कहा, "जी, दस लाख अड़तालीस हज़ार पाँच सौ पिचहत्तर रुपए।"

मंत्री गुस्से में बोला, "मज़ाक कर रहे हो ?" यदि संन्यासी को इतने रुपए दे दिए तब तो राजकोष खाली हो जाएगा।"

भंडारी ने कहा, "मज़ाक क्यों करूँगा? आप ही हिसाब देख लीजिए।"

यह कहकर उसने हिसाब का कागज़ मंत्री जी को दे दिया। हिसाब देखकर मंत्री जी को चक्कर आ गया। सभी उन्हें सँभालकर बड़ी मुश्किलों से राजा के पास ले गए।

राजा ने पूछा, "क्या बात है ?"

मंत्री बोले, "महाराज, राजकोष खाली होने जा रहा है।"

राजा ने पूछा, "वह कैसे?"

मंत्री बोले, "महाराज, संन्यासी को आपने भिक्षा देने का हुक्म दिया है। मगर अब पता चला है कि उन्होंने इस तरह राजकोष से करीब दस लाख रुपए झटकने का उपाय कर लिया है।"

राजा ने गुस्से से कहा, "मैंने इतने रुपये देने का आदेश तो नहीं दिया

था। फिर इतने रुपए क्यों दिए जा रहे हैं ? भंडारी को बुलाओ।" मंत्री ने कहा, "जी सब कुछ आपके हुक्म के अनुसार ही हुआ है। आप खुद ही दान का हिसाब देख लीजिए।"

राजा ने उसे एक बार देखा, दो बार देखा, इसके बाद वह बेहोश हो गया। काफी कोशिशों के बाद उनके होश में आ जाने पर लोग संन्यासी को बुलाने दौड़े।

संन्यासी के आते ही राजा रोते हुए उनके पैरों पर गिर पड़ा। बोला, "दुहाई है संन्यासी महाराज, मुझे इस तरह जान–माल से मत मारिए। जैसे भी हो एक समझौता करके मुझे वचन से मुक्त कर दीजिए। अगर आपको बीस दिन तक भिक्षा दी गई तो राजकोष खाली हो जाएगा। फिर राज–काज कैसे चलेगा।"

संन्यासी ने गंभीर होकर कहा, "इस राज्य में लोग अकाल से मर रहे हैं। मुझे उनके लिए केवल पचास हज़ार रुपए चाहिए। वह रुपया मिलते ही मैं समझूँगा मुझे मेरी पूरी भिक्षा मिल गई है।"

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

दान का हिसाब

पहला दिन	1 रुपया
दूसरा दिन	2 रुपए
तीसरा दिन	4 रुपए
चौथा दिन	8 रुपए
पाँचवाँ दिन	16 रुपए
छठा दिन	32 रुपए
सातवाँ दिन	64 रुपए
आठवाँ दिन	128 रुपए
नवाँ दिन	256 रुपए
दसवाँ दिन	512 रुपए
ग्यारहवाँ दिन	1024 रुपए
बारहवाँ दिन	2048 रुपए
तेरहवाँ दिन	4096 रुपए
चौदहवाँ दिन	8192 रुपए
पद्रंहवाँ दिन	16384 रुपए
सोलहवाँ दिन	32768 रुपए
सत्रहवाँ दिन	65536 रुपए
अठारहवाँ दिन	131072 रुपए
उन्नीसवाँ दिन	262144 रुपए
बीसवाँ दिन	524288 रुपए
कुल	1048575 रुपए

राजा ने कहा, "परंतु उस दिन एक आदमी ने मुझसे कहा था कि लोगों के लिए दस हज़ार रुपए ही बहुत होंगे।"

संन्यासी ने कहा, "मगर आज मैं कहा हूँ कि पचास हज़ार से एक पैसा कम नहीं लूँगा।"

राजा गिड़गिड़ाया, मंत्री गिड़गिड़ाए, सभी गिड़गिड़ाए मगर संन्यासी अपने वचन पर डटा रहा। आखिरकार लाचार होकर राजकोष से पचास हज़ार रुपए संन्यासी को देने के बाद ही राजा की जान बची।

पूरे देश में खबर फैल गई कि अकाल के कारण राजकोष से पचास हज़ार रुपए राहत में दिए गए हैं। सभी ने कहा, "हमारे

महाराज कर्ण जैसे ही दानी हैं।"

कहानी से

(क) राजा किसी को भी दान क्यों नहीं देना चाहता था ?

(ख) राजदरबार के लोग मन ही मन राजा को बुरा कहते थे लेकिन वे राजा का विरोध क्यों नहीं कर पाते थे ?

(ग) राजसभा में सज्जन और विद्वान लोग क्यों नहीं जाते थे ?

(घ) संन्यासी ने सीधे–सीधे शब्दों में भिक्षा क्यों नहीं माँग ली ?

(ङ) राजा को संन्यासी के आगे गिड़गिड़ाने की ज़रूरत क्यों पड़ी ?

अंदाज़ अपना–अपना

तुम नीचे दिए गए वाक्यों को किस तरह से कहोगे ?

(क) दान के वक्त उनकी मुट्ठी बंद हो जाती थी।

(ख) हिसाब देखकर मंत्री का चेहरा फीका पड़ गया।

(ग) संन्यासी की बात सुनकर सभी की जान में जान आई।

(घ) लाखों रुपए राजकोष में मौजूद हैं। जैसे धन का सागर हो।

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

साथी हाथ बढ़ाना

कभी–कभी कुछ इलाकों में बारिश बिल्कुल भी नहीं होती। नदी–नाले, तालाब, सब सूख जाते हैं फसलों के लिए पानी नहीं मिलता। खेत सूख जाते हैं। पशु–पक्षी, जानवर, लोग भूखे मरने लगते हैं। ऐसे समय में वहाँ रहने वाले लोगों को मदद की ज़रूरत होती है। तुम भी लोगों की मदद ज़रूर कर सकते हो। सोचकर बताओ तुम अकाल में परेशान लोगों की मदद कैसे करोगे ?

ज़िम्मेदारी अपनी–अपनी तुम्हारे विचार से राजदरबार में किसकी क्या–क्या ज़िम्मेदारियाँ होगीं ?

(क) मंत्री

(ख) भंडारी

कर्ण जैसा दानी

सभी ने कहा, "हमारे महाराज कर्ण जैसे ही दानी हैं।"

पता करो कि –

(क) कर्ण कौन थे ?

(ख) कर्ण जैसे दानी का क्या मतलब है ?

(ग) दान क्या होता है ?

(घ) किन–किन कारणों से लोग दान करते हैं ?

कहानी और तुम

(क) राजा राजकोष के धन का उपयोग किन–किन कामों में करता था ?

– तुम्हारे घर में जो पैसा आता है वह कहाँ–कहाँ खर्च होता है ? पता करके लिखो।

(ख) अकाल के समय लोग राजा से कौन–कौन से काम करवाना चाहते थे ?

– तुम अपने स्कूल या इलाके में क्या–क्या काम करवाना चाहते हो ?

कैसा राजा

(क) राजा किसी को दान देना पसंद नहीं करता था।

तुम्हारे विचार से राजा सही था या गलत ?

अपने उत्तर का कारण भी बताओ।

(ख) राजा दान देने के अलावा और किन–किन तरीकों से लोगों की सहायता कर सकता था ?

पूर्व और पूर्व

पूर्वी सीमा के लोग भूखे प्यासे मरने लगे।

(क) 'पूर्व' शब्द के दो अर्थ हैं

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

पूर्व–एक दिशा

पूर्व–पहले।

नीचे ऐसे ही कुछ और शब्द दिए गए हैं जिनके दो–दो अर्थ हैं। इनका प्रयोग करते हुए दो–दो वाक्य बनाओ।

जल .....

.....

मन .....

.....

मगर .....

.....

.....

(ख) नीचे चार दिशाओं के नाम लिखे हैं।

तुम्हारे घर और स्कूल के आसपास इन दिशाओं में क्या–क्या है ? तालिका भरो –

दिशा	घर के पास	स्कूल के पास
पूर्व		
पश्चिम		
उत्तर		
दक्षिण		

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

स्वतंत्रता की ओर

धनी को पता था कि आश्रम में कोई बड़ी योजना बन रही है, पर उसे कोई कुछ न बताता। "वे सब समझते हैं कि मैं नौ साल का हूँ इसलिए मैं बुद्धू हूँ। पर मैं बुद्धू नहीं हूँ। धनी मन ही मन बड़बड़ाया।

धनी और उसके माता–पिता, बड़ी खास जगह में रहते थे– अहमदाबाद के पास, महात्मा गांधी के साबरमती आश्रम में। जहाँ पूरे भारत से लोग रहने आते थे। गांधी जी की तरह वे सब भी भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे थे। जब वे आश्रम में ठहरते तो चरखों पर खादी का सूत कातते, भजन गाते और गांधी जी की बातें सुनते।

साबरमती में सबको कोई न कोई काम करना होता–खाना पकाना, बर्तन धोना, कपड़े धोना, कुएँ से पानी लाना, गाय और बकरियों का दूध दुहना और सब्ज़ी उगाना। धनी का काम था बिन्नी की देखभाल करना। बिन्नी, आश्रम की

एक बकरी थी। धनी को अपना काम पसंद था क्योंकि बिन्नी उसकी सबसे अच्छी दोस्त थी। धनी को उससे बातें करना अच्छा लगता था।

उस दिन सुबह, धनी बिन्नी को हरी घास खिला कर, उसके बर्तन में पानी डालते हुए बोला, "कोई बात ज़रूर है बिन्नी वे सब गांधी जी के कमरे में बैठकर बातें करते हैं। कोई योजना बनाई जा रही है। मैं सब समझता हूँ।" बिन्नी ने घास चबाते हुए सिर हिलाया, जैसे कि वह धनी की बात समझ रही हो। धनी को भूख लगी। कूदती–फाँदती बिन्नी को लेकर वह रसोईघर की तरफ चला। उसकी माँ चूल्हा फूँक रही थीं और कमरे में धुआँ भर रहा था।

"अम्मा, क्या गांधी जी कहीं जा रहे हैं ?" उसने पूछा।

खाँसते हुए माँ बोलीं, "वे सब यात्रा पर जा रहे हैं।"

"यात्रा? कहाँ जा रहे हैं ?" धनी ने सवाल किया।

"समुद्र के पास कहीं। अब सवाल पूछना बंद करो और जाओ यहाँ से धनी" अम्मा ज़रा गुस्से से बोलीं, "पहले मुझे खाना पकाने दो।"

धनी सब्ज़ी की क्यारियों की तरफ निकल गया जहाँ बूढ़ा बिंदा आलू

https://byjus.com

खोद रहा था। "बिंदा चाचा," धनी उनके पास बैठ गया, "आप भी यात्रा पर जा रहे हैं क्या?" बिंदा ने सिर हिलाकर मना किया। उसके कुछ बोलने से पहले धनी ने उतावले होकर पूछा, "कौन जा रहे हैं ? कहाँ जा रहे हैं ? क्या हो रहा है?"

बिंदा ने खोदना रोक दिया और कहा, "तुम्हारे सब सवालों के जवाब दूँगा पर पहले इस बकरी को बाँधो! मेरा सारा पालक चबा रही है!"

धनी बिन्नी को खींच कर ले गया और पास के नींबू के पेड़ से बाँध दिया। फिर बिंदा ने उसे यात्रा के बारे में बताया। गांधी जी और उनके कुछ साथी गुजरात में पैदल चलते हुए, दांडी नाम की जगह पर समुद्र के पास पहुँचेंगे। गाँवों और शहरों से होते हुए पूरा महीना चलेंगे। दाँडी पहुँच कर वे नमक बनाएँगे।

"नमक?" धनी चौंक कर उठ बैठा, "नमक क्यों बनाएँगे? वह तो किसी भी दुकान से खरीदा जा सकता है।" "हाँ, मुझे मालूम है।" बिंदा हँसा, "पर महात्मा जी की एक योजना है। यह तो तुम्हें पता ही है कि वह किसी बात के विरोध में ही यात्रा करते हैं या जुलूस निकालते हैं, है न?" "हाँ,

बिल्कुल सही। मैं जानता हूँ। वे ब्रिटिश सरकार के खिलाफ सत्याग्रह के जुलूस निकालते हैं जिससे कि उनके खिलाफ लड़ सकें और भारत स्वतंत्र हो जाए। पर नमक को लेकर विरोध क्यों कर रहे हैं ? यह तो समझदारी वाली बात नहीं है।"

"बिल्कुल, धनी क्या तुम्हें पता है कि हमें नमक पर 'कर' देना पड़ता है?"

"अच्छा।" धनी हैरान रह गया।

"नमक की ज़रूरत सभी को है... इसका मतलब है कि हर भारतवासी गरीब से गरीब भी, यह कर देता है," बिंदा चाचा ने आगे समझाया।

"लेकिन यह तो सरासर अन्याय है!" धनी की आँखों में गुस्सा था।

"हाँ, यह अन्याय है। इतना ही नहीं, भारतीय लोगों को नमक बनाने की मनाही है। महात्मा जी ने ब्रिटिश सरकार को कर हटाने को कहा पर उन्होंने यह बात ठुकरा दी। इसलिए उन्होंने निश्चय किया है कि वे दांडी चल कर जाएँगे और समुद्र के पानी से नमक बनाएँगे।"

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

"एक महीने तक पैदल चलेंगे!" धनी सोच कर परेशान हो रहा था। "गांधी जी तो थक जाएँगे। वे दांडी बस या ट्रेन से क्यों नहीं जा सकते ?"

"क्योंकि, यदि वे इस लंबी यात्रा पर दांडी तक पैदल जाएँगे तो यह खबर फैलेगी। अखबारों में फोटो छपेंगी, रेडियों पर रिपोर्ट जाएगी! और पूरी दुनिया के लोग यह जान जाएँगे कि हम अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे हैं। और ब्रिटिश सरकार के लिए यह बड़ी शर्म की बात होगी।"

"गांधी जी, बड़े ही अकलमंद हैं, हैं न?" बिंदा ने हँसकर कहा, "हाँ, वह तो हैं ही।"

दोपहर को जब आश्रम में थोड़ी शांति छाई, धनी अपने पिता को ढूँढ़ने निकला। वह एक पेड़ के नीचे बैठकर चरखा कात रहे थे।

"पिता जी, क्या आप और अम्मा दांडी यात्रा पर जा रहे हैं ?" धनी ने सीधे काम की बात पूछी।

"मैं जा रहा हूँ। तुम और अम्मा यहीं रहोगे।"

"मैं भी आपके साथ चल रहा हूँ।"

"बेकार की बात मत करो धनी तुम इतना लंबा नहीं चल पाओगे। आश्रम के नौजवान ही जा रहे हैं।"

धनी ने हठ पकड़ ली, "मैं नौ साल का हूँ और आपसे तेज़ दौड़ सकता हूँ।"

धनी के पिता ने चरखा रोक कर बड़े धीरज से समझाया, "सिर्फ वे लोग जाएँगे जिन्हें महात्मा जी ने खुद चुना है।"

"ठीक है! मैं उन्हीं से बात करूँगा। वह ज़रूर हाँ करेंगे!" धनी खड़े होकर बोला और वहाँ से चल दिया।

गांधी जी बड़े व्यस्त रहते थे। उन्हें अकेले पकड़ पाना आसान नहीं था। पर धनी को वह समय मालूम था जब उन्हें बात सुनने का समय होगा—रोज़ सुबह, वह आश्रम में पैदल घूमते थे।

अगले दिन जैसे ही सूरज निकला, धनी बिस्तर छोड़कर गांधी जी को ढूँढ़ने निकला। वे गौशाला में गायों को देख रहे थे। फिर वह सब्ज़ी के बगीचे में मटर और बंदगोभी देखते हुए बिंदा से बात करने लगे। धनी और बिन्नी लगातार उनके पीछे—पीछे चल रहे थे।

अंत में, गांधी जी अपनी झोंपड़ी की ओर चले। बरामदे में चरखे के पास बैठ कर उन्होंने धनी को पुकारा, "यहाँ आओ, बेटा!"

धनी दौड़कर उनके पास पहुँचा। बिन्नी भी साथ में कूदती हुई आई।

"तुम्हारा क्या नाम है, बेटा?"

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

"धनी, बापू।"

"और यह तुम्हारी बकरी है?"

"जी हाँ, यह मेरी दोस्त बिन्नी है, जिसका दूध आप रोज़ सुबह पीते हैं", धनी गर्व से मुस्कराया, "मैं इसकी देखभाल करता हूँ।"

"बहुत अच्छा" गांधी जी ने हाथ हिलाकर कहा,

"अब यह बताओ धनी कि तुम और बिन्नी सुबह से मेरे पीछे क्यों घूम रहे हो?"

"मैं आपसे कुछ पूछना चाहता था", धनी थोड़ा घबराया। "क्या मैं आपके साथ दांडी चल सकता हूँ?" हिम्मत करके उसने कह डाला।

गांधी जी मुस्कुराए, "तुम अभी छोटे हो बेटा दांडी तो बहुत दूर है! सिर्फ तुम्हारे पिता जैसे नौजवान ही मेरे साथ चल पाएँगे।"

"पर आप तो नौजवान नहीं हैं", धनी बोला, "आप नहीं थक जाएँगे?"

"मैं बहुत अच्छे से चलता हूँ" गांधी जी ने कहा।

"मैं भी बहुत अच्छे से चलता हूँ, धनी भी अड़ गया। "हाँ, ठीक बात है", कुछ सोचकर गांधी जी बोले, "मगर एक समस्या है। अगर तुम मेरे साथ जाओगे तो बिन्नी को कौन देखेगा? इतना चलने के बाद, मैं तो कमज़ोर हो

जाऊँगा। इसलिए, जब मैं वापस आऊँगा तो मुझे खूब सारा दूध पीना पड़ेगा, जिससे कि मेरी ताकत लौट आए।"

"हूँ... यह बात तो ठीक है, बिन्नी तभी खाती है, जब मैं उसे खिलाता हूँ", धनी ने प्यार से बिन्नी का सिर सहलाया, "और सिर्फ मैं जानता हूँ कि इसे क्या पसंद है।" "बिल्कुल सही। तो क्या तुम आश्रम में रहकर मेरे लिए बिन्नी की देखभाल करोगे ?" गांधी जी प्यार से बोले। "जी, हाँ, करूँगा", धनी बोला, "बिन्नी और मैं आपका इंतज़ार करेंगे।"

सुभद्रा सेन गुप्ता

अनुवाद–मनीषा चौधरी

प्यारे बापू

इस कहानी को पढ़कर तुम्हें बापू के बारे में कई बातें पता चली होंगी। उनमें से कोई तीन बातें यहाँ लिखें।

.....

.....

.....

.....

https://byjus.com

BYJU'S
The Learning App

....

....

चूल्हा

धनी की माँ चूल्हा फूँक रही थीं।

धनी की माँ खाना पकाने के लिए चूल्हे का इस्तेमाल करती थीं। नीचे कुछ चित्र बने हैं। इनके नाम पता करो और लिखो।

इनमें कौन–कौन से ईंधन का इस्तेमाल किया जाता है ?

तुम्हारे घर में खाना पकाने के लिए इनमें से किसका इस्तेमाल किया जाता है?

कहानी से आगे

नीचे कहानी में आए कुछ शब्द लिखे हैं। कक्षा में चार–चार के समूह में एक–एक चीज़ के बारे में पता करो–

स्वतंत्रता सत्याग्रह

खादी चरखा

तुम इस काम में अपने दोस्तों से, बड़ों से, शब्दकोश या पुस्तकालय से सहायता ले सकते हो। जानकारी इकट्ठा करने के बाद कक्षा में इसके बारे में बताओ।

आगे की कहानी

गांधी जी ने धनी से कहा, "क्या तुम आश्रम में ही रहकर मेरे लिए बिन्नी की देखभाल करोगे?"

धनी ने गांधी जी की बात मान ली।

जब गांधी जी दांडी यात्रा से लौटे होंगे, तब आश्रम में क्या–क्या हुआ होगा ? आगे की कहानी सोचकर लिखो।

कहानी से

(क) धनी ने गांधी जी से सुबह के समय बात करना क्यों ठीक समझा होगा ?

(ख) धनी बिन्नी की देखभाल कैसे करता था ?

(ग) धनी को यह कैसे महसूस हुआ होगा कि आश्रम में कोई योजना बनाई जा रही है?

कहानी और तुम

(क) धनी यात्रा पर जाने के लिए उत्सुक क्यों था ?

– अगर तुम धनी की जगह होते तो क्या तुम यात्रा पर जाने की जिद करते ? क्यों ?

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

(ख) गांधी जी ने धनी को न जाने के लिए कैसे मनाया ?

– क्या तुम गांधी जी के तर्क से सहमत हो ? क्यों ?

ताकत के लिए

गांधी जी ने कहा, "जब मैं वापस आऊँगा तो मुझे खूब सारा दूध पीना पड़ेगा, जिससे कि मेरी ताकत लौट आए।"

बताओ, खूब सारी ताकत और अच्छी सेहत के लिए तुम क्या–क्या खाओगे–पिओगे ?

चटपटी अंकुरित दाल	मीठा दूध
गर्म समोसे	रसीला आम
करारे गोलगप्पे	गर्मागर्म साग
कुरकुरी मक्का की रोटी	ठंडी आइसक्रीम
खुशबूदार दाल	रंग–बिरंगी टॉफी
मसालेदार अचार	ठंडा शरबत

विशेषता के शब्द

अभी तुमने जिन खाने–पीने की चीज़ों के नाम पढ़े, उनकी विशेषता बता रहे हैं ये शब्द–

चटपटी, मीठा, गर्म, ठंडा, कुरकुरी आदि

जम्मू-कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन

नीचे लिखी चीज़ों की विशेषता बताने वाले शब्द सोचकर लिखो–

..... हलवा ..... पेड़ .....नमक ..... चींटी

..... पत्थर ..... कुरता ..... चशमा ..... झंडा

चाँद की बिंदी नीचे लिखे शब्दों में सही जगह पर (ं) या (ँ) लगाओ।

धुआ	कुआ	फूक	कहा
स्वतत्र	बाध	मा	गाव
बदगोभी	इतज़ार	पसद	

किसकी ज़िम्मेदारी ?

धनी को बिन्नी की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी दी गई थी। इनकी क्या–क्या ज़िम्मेदारियाँ थीं ?

माँ

पिता

बिंदा

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

पढ़क्कू की सूझ

एक पढ़क्कू बड़े तेज़ थे, तर्कशास्त्र पढ़ते थे,
जहाँ न कोई बात, वहाँ भी नई बात गढ़ते थे।

एक रोज़ वे पड़े फिक्र में समझ नहीं कुछ पाए,
"बैल घूमता है कोल्हू में कैसे बिना चलाए?"

कई दिनों तक रहे सोचते, मालिक बड़ा गज़ब है ?
सिखा बैल को रक्खा इसने, निश्चय कोई ढब है।

आखिर, एक रोज़ मालिक से पूछा उसने ऐसे,
"अजी, बिना देखे, लेते तुम जान भेद यह कैसे ?

कोल्हू का यह बैल तुम्हारा चलता या अड़ता है ?
रहता है घूमता, खड़ा हो या पागुर करता है?"

मालिक ने यह कहा, "अजी, इसमें क्या बात बड़ी है ?
नहीं देखते क्या, गर्दन में घंटी एक पड़ी है ?

जब तक यह बजती रहती है, मैं न फिक्र करता हूँ,
हाँ, जब बजती नहीं, दौड़कर तनिक पूँछ धरता हूँ।"

कहा पढ़क्कू ने सुनकर, "तुम रहे सदा के कोरे!
बेवकूफ मंतिख की बातें समझ सकोगे थोड़े!

अगर किसी दिन बैल तुम्हारा सोच–समझ अड़ जाए,
चले नहीं, बस, खड़ा–खड़ा गर्दन को खूब हिलाए।

घंटी टुन–टुन खूब बजेगी, तुम न पास आओगे,
मगर बूँद भर तेल साँझ तक भी क्या तुम पाओगे ?

मालिक थोड़ा हँसा और बोला कि पढ़क्कू जाओ,
सीखा है यह ज्ञान जहाँ पर, वहीं इसे फैलाओ।

यहाँ सभी कुछ ठीक–ठाक है, यह केवल माया है,
बैल हमारा नहीं अभी तक मंतिख पढ़ पाया है।

–रामधारी सिंह दिनकर

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

कविता में कहानी

'पढ़क्कू की सूझ' कविता में एक कहानी कही गई है। इस कहानी को तुम अपने शब्दों में लिखो।

कवि की कविताएँ

अपने साथियों के साथ मिलकर एक–एक कविता ढूँढो। कविताएँ इकट्ठा करके कविता की एक किताब बनाओ।

मेहनत के मुहावरे

कोल्हू का बैल ऐसे व्यक्ति को कहते हैं जो कड़ी मेहनत करता है या जिससे कड़ी मेहनत करवाई जाती है।

मेहनत और कोशिश से जुड़े कुछ और मुहावरे नीचे लिखे हैं। इनका वाक्यों में इस्तेमाल करो।

दिन–रात एक करना

पसीना बहाना

एड़ी–चोटी का ज़ोर लगाना

पढ़क्कू

(क) पढ़क्कू का नाम पढ़क्कू क्यों पड़ा होगा ?

(ख) तुम कौन–सा काम खूब मन से करना चाहते हो ? उसके आधार पर अपने लिए भी पढ़क्कू जैसा कोई शब्द सोचो।

अपना तरीका

हाँ जब बजती नहीं, दौड़कर तनिक पूँछ धरता हूँ पूँछ धरता हूँ का मतलब है पूँछ पकड़ लेता हूँ।

नीचे लिखे वाक्यों को अपने शब्दों में लिखो।

(क) मगर बूँद भर तेल साँझ तक भी क्या तुम पाओगे ?

(ख) बैल हमारा नहीं अभी तक मंतिख पढ़ पाया है।

(ग) सिखा बैल को रखा इसने निश्चय कोई ढब है।

(घ) जहाँ न कोई बात, वहाँ भी नई बात गढ़ते थे।

गढ़ना

पढ़क्कू नई–नई बातें गढ़ते थे।

पढ़क्कू नई–नई बातें गढ़ते थे।

बताओ, ये लोग क्या गढ़ते हैं ?

सुनार ..... कवि .....

लुहार ..... कुम्हार .....

ठठेरा ..... लेखक .....

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

अर्थ

खोजो नीचे दिए गए शब्दों के अर्थ अक्षरजाल में खोजो –

ढब, भेद, गज़ब, मंतिख, छल

त	र्क	शा	स्त्र	म्र
रा	ज	त	क	ब
जू	स	री	मा	धो
रा	ज़	का	ल	खा
धो	क	म	ल	ड़

मुफ़्त ही मुफ़्त

एक दिन भीखू भाई का मन नारियल खाने का हुआ। ताज़ा–मुलायम, कसा हुआ, शक्कर के साथ। म्म्म! उसके बारे में सोचते ही भीखू भाई ने अपने होठों को चटकारा, "वाह क्या मीठा–मीठा सा स्वाद होगा!"

लेकिन एक छोटी–सी समस्या थी। घर में तो एक भी नारियल नहीं था।

"ओहो! अब मुझे बाज़ार जाना पड़ेगा," उन्होंने अपनी पत्नी लाभुबेन से कहा।

लाभुबेन अपने कंधे उचकाकर बोलीं, "खाना है तो जाना है।"

एक समस्या और थी।

भीखूभाई ने कहा, "पैसे खर्च करने पड़ेंगे,"

लाभुबेन बोली, हाँ। पैसे तो खर्च करने पड़ेंगे।" अब तक तो तुम्हें पता लग गया होगा कि भीखूभाई ज़रा कंजूस थे। वे सीधे खेत में बूढ़े बरगद के

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

नीचे जा कर बैठ गए और सोचने लगे, "क्या करूँ ? मैं क्या करूँ ?"

मगर नारियल खाने के लिए जी ऐसा ललचाया कि वे जल्दी घर वापस लौटकर लाभुबेन से बोले, "अच्छा, मैं बाज़ार तक हो आता हूँ। पता तो चले कि नारियल आजकल कितने में बिक रहे हैं।" जूते पहनकर, छड़ी उठाकर, भीखूभाई निकल पड़े।

बाज़ार में लोग अपने–अपने कामों मे लगे थे। भीखूभाई ने इधर कुछ देखा, उधर कुछ उठाया और दाम पूछा। देखते–पूछते, वे नारियलवाले के पास पहुँच गए।

"ऐ नारियलवाले, नारियल कितने में दोगे?" भीखूभाई ने पूछा।

नारियलवाले ने कहा, "बस, दो रुपए में काका,"

"बस, दो रुपए" भीखूभाई ने आँखे फैलाकर कहा, " बहुत ज़्यादा है। एक रुपए में दे दो।"

नारियलवाले ने कहा, "ना जी ना। दो रुपए, सही दाम। ले लो या छोड़ दो,"

"ठीक है ठीक है"

भीखूभाई बड़बड़ाए। "अच्छा तो बताओ, एक रुपए

में कहाँ मिलेगा?" नारियलवाले ने कहा, "यहाँ से थोड़ी दूर जो मंडी है, वहाँ

शायद मिल जाए।" सो भीखूभाई उसी तरफ चल पड़े। "चलो देख लेते हैं," वे अपने आप से बोले, "टहलने का एक मौका है और रुपए भर की बचत भी हो जाएगी।" खुशी से घुरघुराते भीखूभाई ने छड़ी को ज़मीन पर थपथपाया। मंडी में कोलाहल फैला हुआ था। व्यापारियों की ऊँची–ऊँची आवाज़ें गूँज रही थीं।

"बटाटा–आलू, बटाटा–आलू! कांदा–प्याज़ कांदा–प्याज़! गाजर गाजर गाजर! कोबी–बंदगोभी कोबी–बंदगोभी!"

माथे का पसीना पोंछकर भीखूभाई ने इधर–उधर ताका। नारियलवाले को देखकर पूछा, "अरे भाई, एक नारियल कितने में दोगे ?"

"सिर्फ एक रुपया, काका" नारियलवाले ने जवाब दिया, "जो चाहो ले जाओ। जल्दी।"

"शू छे भाई?" भीखूभाई ने कहा, "यह क्या? मैं इतनी दूर से आया हूँ और तुम पूरा एक रुपया माँग रहे हो। पच्चास पैसे काफी हैं। मैं इस नारियल को लेता हूँ और तुम, यह लो, पकड़ो पच्चास पैसे।"

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

नारियलवाले ने झट भीखूभाई के हाथ से नारियल को छीन लिया और बोला, "माफ करो, काका। एक रुपया या फिर कुछ नहीं।" लेकिन भीखूभाई का निराश चेहरा देखकर बोला, "बंदरगाह पर चले जाओ, हो सकता है वहा तुम्हें पच्चास पैसे में मिल जाए।"

भीखूभाई अपनी छड़ी से टेक लगाकर सोचने लगे, "आखिर पच्चास पैसे तो पूरे पच्चास पैसे हैं। वैसे भी मेरी टाँगों में अभी भी दम है।"

पैरों को घसीटते हुए, भीखूभाई चलने लगे। हर दो कदम पर रुककर, जेब में से बड़ा सफेद रुमाल निकालकर, वे अपना पसीना पोंछते।

सागर के किनारे एक नाववाला बैठा था। उसके सामने दो–चार नारियल पड़े थे। "अरे भाई, एक नारियल कितने में दोगे?" भीखूभाई ने पूछा और कहा, "ये तो काफी अच्छे दिखते हैं।"

"काका, यह कोई पूछने वाली बात है ? केवल पच्चास पैसे" नाववाले ने कहा।

"पच्चास पैसे!" भीखूभाई मानो हैरानी से हक्के–बक्के हो गए। "इतनी दूर से पैदल आया हूँ। इतना थक गया हूँ और तुम कहते हो पच्चास पैसे? मेरी मेहनत बेकार हो गई। ना भाई

ना! पच्चास पैसे बहुत ज़्यादा है। मैं तुम्हें पच्चीस पैसे दूँगा। यह लो, रख लो।" ऐसा कहते हुए, भीखूभाई झुककर नारियल उठाने ही वाले थे...

नाववाले ने कहा, "नीचे रख दो। मेरे साथ कोई सौदा–वौदा नहीं।"

जब उसने भीखूभाई की ओर ध्यान से देखा तो ज़रा ठंडे दिमाग से बोला, "सस्ते में चाहिए ? नारियल के बगीचे में चले जाओ। वहाँ ढेर सारे मिल जाएँगे, मनपसंद दाम में।"

भीखूभाई ने फिर अपने आप को समझाया, "इतनी दूर आया हूँ। अब बगीचे तक जाने में हर्ज ही क्या है ?" सच बात तो यह थी कि वे काफी थक चुके थे। मगर पच्चीस पैसे बचाने के ख्याल से ही उनमें फुर्ती आ गई।

भीखूभाई ने सोचा, "दोगुना ज़्यादा चलना पड़ेगा, पर चार आने बच भी

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

तो जाएँगे और फिर, कोई भी चीज़ मुफ़्त में कहाँ मिलती है ?"

भीखूभाई नारियल के बगीचे में पहुँच गए। वहाँ के माली को देखकर उससे पूछा, "यह नारियल कितने में बेचोगे ?" माली ने जवाब दिया, "जो पसंद आए ले जाओ, काका, बस, पच्चीस पैसे का एक। देखो, कितने बड़े–बड़े हैं"

"हे भगवान पच्चीस पैसे पूरा रास्ता पैदल आने के बाद भी जूते घिस गए, पैर थक गए और अब पैसे भी देने पड़ेंगे ? मेरी बात मानो एक नारियल मुफ़्त में ही दे दो हाँ। देखो, मैं कितना थक गया हूँ"

भीखूभाई की बात सुनकर माली ने कहा, "अरे, काका। मुफ़्त में चाहिए न? यह रहा पेड़ और वह रहा नारियल। पेड़ पर चढ़ जाओ और जितने चाहो तोड़ लो। वहाँ नारियल की कोई कमी नहीं है। पैसे तो मेरी मेहनत के हैं।"

"सच? जितना चाहूँ ले लूँ?" भीखूभाई तो खुशी से फूले न समाए। मेरा यहाँ तक आना बेकार नहीं गया!"

पेड़ पर चढ़ते–चढ़ते भीखूभाई ने सोचा "बहुत अच्छे मेरी तो किस्मत खुल गई। जितने नारियल चाहे तोड़ लूँ और पैसे भी न दूँ। क्या बात है" भीखूभाई ऊपर पहुँच गए। फिर वे टहनी और तने के बीच आराम से बैठ गए और दोनों हाथों को आगे बढ़ाने लगे सबसे बड़े नारियल को तोड़ने के लिए। ज़्ज़्क! पैर फिसल गए। भीखूभाई ने एकदम से नारियल को पकड़ लिया। उनके दोनों पैर हवा में झूलते रह गए।

"ओ माँ ! अब मैं क्या करूँ ?"

भीखूभाई चिल्लाने लगे, "अरे भाई मदद करो!" उन्होंने नीचे खड़े माली से विनती की।

माली ने कहा, "वो मेरा काम नहीं, काका, मैंने सिर्फ नारियल लेने की बात की थी बाकी सब तुम्हारे और तुम्हारे नारियल के बीच का मामला है। पैसे नहीं, खरीदना नहीं, बेचना नहीं, और मदद नहीं। सब कुछ मुफ़्त।"

तभी ऊँट पर सवार एक आदमी वहाँ से गुज़रा। "अरे ओ!" भीखूभाई ज़ोर–ज़ोर से बुलाने लगे, "ओ ऊँटवाले! मेरे पैर वापस पेड़ पर टिका दो न! बड़ी मेहरवानी होगी।"

ऊँटवाले ने सोचा, "चलो, मदद कर देता हूँ। मेरा क्या जाता है।"

ऊँट की पीठ पर खड़े होकर उसने भीखूभाई के पैरों को पकड़ लिया। ठीक उसी समय ऊँट को हरे–हरे पत्ते नज़र आए। पत्ते खाने के लालच में

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

ऊँट ने गर्दन झुकाई और अपनी जगह से हट गया।

बस, वह आदमी ऊँट की पीठ से फिसल गया अपनी जान बचाने के लिए उसने भीखूभाई के पैरों को कसकर पकड़ लिया। अब दोनों क्या करते? इतने में एक घुड़सवार आया। "अरे, सांभ्लो छो!" पेड़ से लटके दोनों पुकारने लगे। "सुनो भाई, कोई बचाओ! बचाओ! घुड़सवार को देखकर भीखूभाई ने दुहाई दी, "ओ मेरे भाई, मुझे पेड़ पर वापस पहुँचा दो।"

"हम्म्म। एक मिनट भी नहीं लगेगा। मैं घोड़े की पीठ पर चढ़कर इनकी मदद कर देता हूँ" यह सोचकर घुड़सवार घोड़े पर उठ खड़ा हुआ।

लेकिन कौन कहता है कि घोड़ा ऊँट से बेहतर है? हरी–हरी घास दिखाई देने पर तो दोनों एक जैसा ही हैं। घास के चक्कर में घोड़ा ज़रा आगे बढ़ा और छोड़ चला अपने मालिक को ऊँटवाले के पैरों से लटकते हुए।

एक, दो और अब तीनों के तीनों–झूलते रहे नारियल के पेड़ से।

"काका! काका! कसके पकड़े रहना, हाँ", घुड़सवार ने पसीना–पसीना होते हुए कहा, "जब तक कोई बचाने वाला न आए, कहीं छोड़ न देना। मैं आपको सौ रुपए दूँगा।"

"काका! काका!" अब ऊँटवाले की बारी थी। "मैं आपको दो सौ रुपए दूँगा, लेकिन नारियल को छोड़ना नहीं।"

"सौ और दो सौ बाप रे बाप, तीन सौ रुपए" भीखूभाई का सिर चकरा

गया। "इतना इतना सारा पैसा" खुशी से उन्होंने अपनी दोनों बाहों को फैलाया और नारियल गया हाथ से छूट।

धड़ाम से तीनों ज़मीन पर गिरे–घुड़सवार, ऊँटवाला और भीखूभाई। भीखूभाई अपने आप को सँभाल ही रहे थे कि एक बहुत बड़ा नारियल उनके सिर पर आ फूटा। बिल्कुल मुफ़्त।

ममता पाण्ड्या

अनुवाद–संध्या राव

तुम्हारी समझ

(क) हर बार भीखूभाई कम दाम देना चाहते थे। क्यों ?

(ख) हर जगह नारियल के दाम में फर्क क्यों था ?

(ग) क्या भीखूभाई को नारियल सच में मुफ़्त में ही मिला ? क्यों ?

(घ) वे खेत में बूढ़े बरगद के नीचे बैठ गए। तुम्हारे विचार से कहानी में बरगद को बूढ़ा क्यों कहा गया होगा ?

भीखूभाई ऐसे थे

कहानी को पढ़कर तुम भीखूभाई के बारे में काफी कुछ जान गए होगे।

भीखूभाई के बारे में कुछ बातें बताओ।

(क) उन्हें खाने–पीने का शौक था।

(ख) .....

(ग) .....

(घ) .....

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

(ड).....

क्या बढ़ा, क्या घटा कहानी जैसे–जैसे आगे बढ़ती है, कुछ चीज़ें बढ़ती हैं और कुछ घटती हैं। बताओ इनका क्या हुआ, ये घटे या बढ़े ?

नारियल का दाम .....

भीखूभाई का लालच .....

रास्ते की लंबाई .....

भीखूभाई की थकान .....

कहो कहानी

यदि इस कहानी में भीखूभाई को नारियल नहीं बल्कि आम खाने की इच्छा होती तो कहानी आगे कैसे बढ़ती ? बताओ।

बात की बात

कहानी में नारियल वाले और भीखूभाई की बातचीत फिर से पढ़ो। अब इसे अपने घर की बोली में लिखो।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.

.....

शब्दों की बात

नाना–नानी पतीली–पतीला

ऊपर दिए गए उदाहरणों की मदद से नीचे दी गई जगह में सही शब्द लिखो।

काका	.....	दर्ज़ी	.....
मालिन	.....	टोकरी	.....
मटका	.....	गद्दा	.....

मंडी

"मंडी में कोलाहल फैला हुआ था। व्यापारियों की ऊँची–ऊँची आवाज़ें गूँज रही थीं।"

(क) मंडी में क्या–क्या बिक रहा होगा ?

(ख) मंडी में तरह–तरह की आवाज़ें सुनाई देती हैं।

जैसे – ताज़ा टमाटर बीस रुपया बीस रुपया! बीस रुपया!

मंडी में और कैसी आवाज़ें सुनाई देती हैं ?

.....

.....

.....

https://byjus.com

BYJU'S The Learning App

.....

.....

(ग) क्या तुम अपने आसपास की ऐसी जगह सोच सकते हो, जहाँ बहुत शोर होता है। उस जगह के बारे में लिखो।

.....

.....

.....

.....

.....

गुजरात की झलक

(क) 'मुफ़्त ही मुफ़्त' गुजरात की लोककथा है। इस लोककथा के चित्रों में ऐसी कौन सी बातें हैं जिनसे तुम यह अंदाज़ा लगा सकते हो ?

.....

.....

.....

.....

.....

(ख) गुजरात में किसी का आदर करने के लिए नाम के साथ भाई, बेन (बहन) जैसे शब्दों का प्रयोग होता है। तेलुगु में नाम के आगे 'गारू' और हिंदी

में 'जी' जोड़ा जाता है।

तुम्हारी कक्षा में भी अलग–अलग भाषा बोलने वाले बच्चे होंगे! पता करो और लिखो कि वे अपनी भाषा में किसी को आदर देने के लिए किन–किन शब्दों का इस्तेमाल करते है।

.....

.....

https://byjus.com